ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५८ अंक -७ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अप्रैल (प्रथम) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

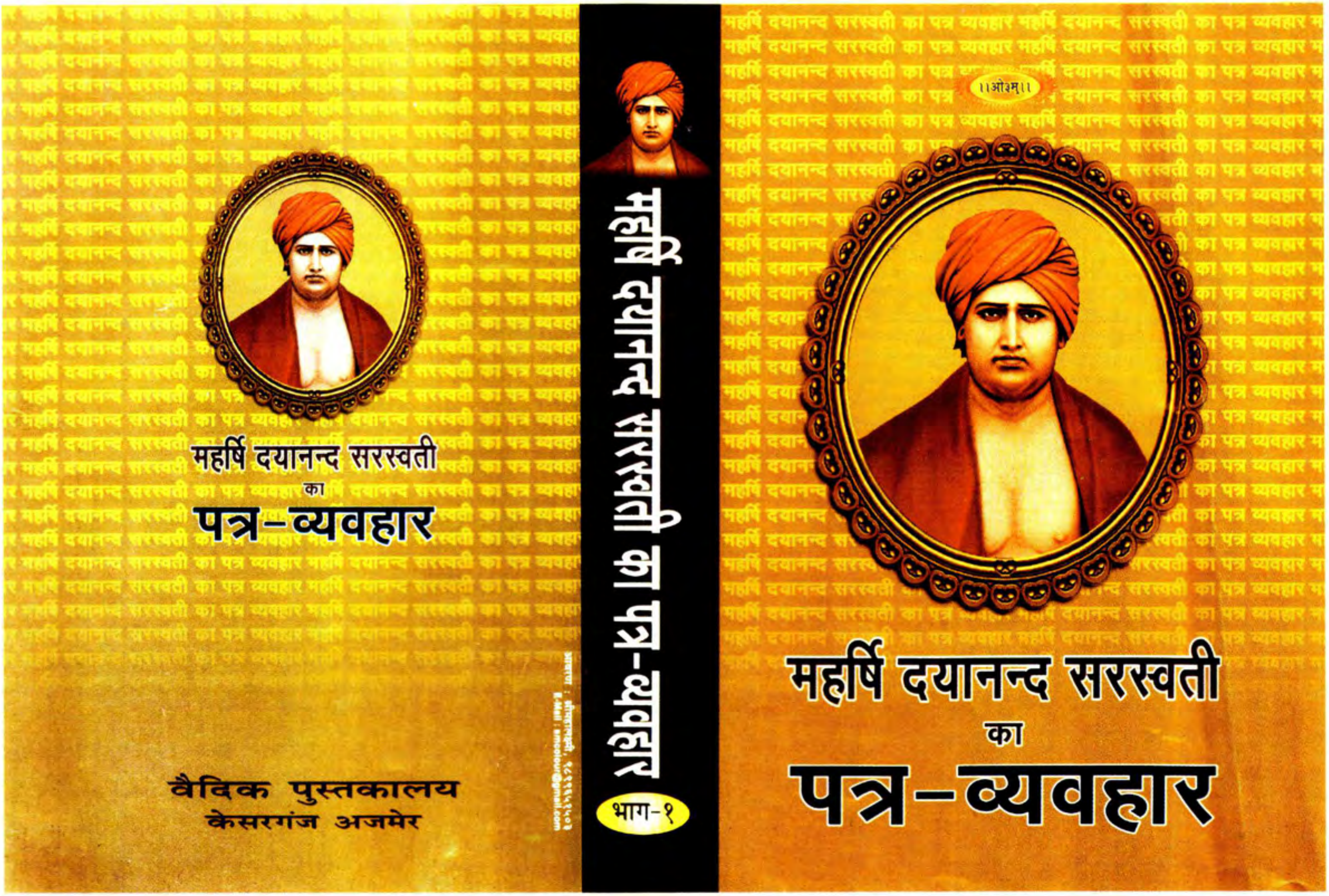

वैदिक पुस्तकालय का नया प्रकाशन

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः॥

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अप्रैल प्रथम २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : ७
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: चैत्र कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

अनुक्रम

१. वैदिक धर्म में ईश्वर का स्वरूप	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. पुरी में रहने वाले 'पुरुष' दो हैं	इन्द्रजित् देव	१४
४. संस्कृत साहित्य में 'डायरी' विधा	डॉ. अंजना शर्मा	१६
५. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		१९
६. प्राणोपासना-२	तपेन्द्र कुमार	२०
७. सरमा पणि संवाद - एक विवेचन	उदयन आर्य	२३
८. ईश्वर अवतार नहीं लेता	डॉ. व्रजेन्द्रपाल सिंह	२८
९. हैदराबाद पुस्तक मेले में इस्लामिक बुकस्थल पर धर्म चर्चा		३१
१०. जिज्ञासा समाधान-१०८	आचार्य सोमदेव	३३
११. डॉ० धर्मवीर आचार्य का.......	राजवीर सिंह	३५
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३१		३६
१३. पुस्तक परिचय	देवमुनि	३७
१४. संस्था-समाचार		३८
१५. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

वैदिक धर्म में ईश्वर का स्वरूप

ईश्वर के सम्बन्ध में विचार करते हुए इस विषयक सभी संभावनाओं पर विचार करना आवश्यक है। **प्रथम** सम्भावना है- ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है, अत: ईश्वर की सत्ता भी नहीं है। **द्वितीय** सम्भावना है- किसी भी वस्तु को ईश्वर मान लिया जा सकता है। **तृतीय** सम्भावना है- यदि वस्तु को ईश्वर मानने में असुविधा है तो चेतन मनुष्य को ईश्वर माना जा सकता है। ये प्रश्न सदा से मनुष्य के लिए विचारणीय रहे हैं और आज भी विचारणीय हैं। इन प्रश्नों के उत्तर भी हमें विभन्न विचारकों के साहित्य में मिलते हैं। इन विचारकों के तर्कों, युक्तियों और प्रमाणों पर विचार करके ही हम किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं।

प्रथम सम्भावना- जब-जब हमारे सामने कुछ प्रश्न उपस्थित होते हैं, तब-तब ईश्वर के मानने की आवश्यकता पड़ती है। यह संसार कैसे बना, इसकी बनाने की सामग्री क्या है, इसका बनाने वाला कौन है, संसार में जितने भी चेतन प्राणी दृष्टिगत हो रहे हैं वे कहाँ से प्रकट हो रहे हैं, संसार में उनकी सत्ता का आधार व औचित्य क्या है, जो आये हैं बने हैं वे कहाँ जा रहे हैं, उनका जाना उनकी अपनी इच्छा से है या वे इन सब परिस्थितियों के लिए किसी और के आधीन हैं, इन प्राणियों के जीवन में होने वाले सुख-दु:ख प्राणियों की अपनी इच्छा का परिणाम है या ये भी किसी से नियन्त्रित हैं?[१]

द्वितीय सम्भावना- इसके विकल्प में जितने समाधान हो सकते हैं, उनमें प्रथम है- संसार की दृश्यमान वस्तुएँ इस संसार का कारण हो सकती हैं। इसमें दो विकल्प हैं- वस्तु पृथक्-पृथक् रूप में कारण है या इन सबका मेल कारण है?[२]

तृतीय सम्भावना- यदि ये अपने-आप संसार को नहीं बना सकते तो संसार का चेतन दीखने वाला मनुष्य इस संसार का रचयिता हो सकता है। यदि वह समर्थ है तो उसके सुख-दु:ख का वह स्वयं नियन्त्रक क्यों नहीं है? इस प्रकार का चिन्तन पुरातन काल से चला आ रहा है और आज भी ये प्रश्न वैसे ही हमारे सामने खड़े हैं।[३]

ईश्वर नहीं होने का पहला तर्क है- ईश्वर होता तो एक पदार्थ होता और पदार्थों को जाना जाता है, अत: ईश्वर को भी जान लिया जाता। मनुष्य के पास जानने के साधनों के रूप में उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, जिनसे संसार के सभी पदार्थ जाने जाते हैं।[४] जानने के इन साधनों में से किसी भी साधन से ईश्वर की प्रतीति नहीं होती, अत: ईश्वर का अस्तित्व नहीं है।

जानने के साधनों में सबसे प्रमुख नेत्र हैं, अत: अधिकांश लोग ईश्वर को आँखों से देखना चाहते हैं। आँखों से देखने का अर्थ वस्तु के रूपवान् होने से लेते हैं। कोई वस्तु रूपवाली होने पर ही दिखाई दे सकती है, परन्तु संसार में केवल आँख से दिखाई देना मात्र किसी वस्तु के होने का आधार नहीं बनता। नेत्र से अतिरिक्त ज्ञानेन्द्रियों से जो वस्तुएँ जानी जाती हैं, वे सभी रूप से रहित हैं। जैसे गन्ध, शब्द आदि, इनका आँख से कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु इन वस्तुओं का अस्तित्व हम सभी अनुभव करते हैं, अत: इनसे जानी जाने वाली वस्तुओं के लिए भी देखना शब्द का प्रयोग करते हैं। देखो, शब्द कितना मीठा है, गन्ध कितनी अच्छी है! देखो, स्पर्श कितना कोमल है, स्वाद कैसा मधुर है! इस प्रकार देखना शब्द का अभिप्राय जानना होता है।

संसार की वस्तुओं को देखने से भी इन बातों की पुष्टि होती है। जो वस्तु साकार है, वह अनेक है। जो साकार है, वह एकदेशीय है। जो साकार है, वह निर्मित है, उसे किसी ने बनाया है, उसका कोई बनाने वाला है। जो बनी है, वह नाशवान् है। जो वस्तु बनी है, साकार है, वह जड़ भी है। इस प्रकार ईश्वर को साकार मानने में बहुत सारी बाधाएँ आती हैं, अत: ईश्वर एक और निराकार है।

इसी प्रकार हम मानते हैं, परमेश्वर खाता है, पीता है, सोता है, अत: परमेश्वर के साथ सभी कार्य जोड़ लिए जाते हैं, जैसे लड़कियाँ छोटी अवस्था में गुड़ियों का खेल करते हुए उन्हें खिलाती, पिलाती, सुलाती हैं। गुड़िया वास्तव में खाती नहीं। बच्ची जानती नहीं, परन्तु इसके मन में सन्देह तो है। लोग पूरे जीवन मूर्ति को खिलाकर आते हैं और उनके मन में सन्देह भी उत्पन्न नहीं होता, यह विचित्रता है।

एक और प्रश्न ईश्वर के सम्बन्ध में विचारणीय है। कहते हैं- अजी, मानो तो पत्थर भी भगवान् है, न मानो तो पत्थर है। यहाँ समझने की बात यह है कि हम ईश्वर है, इसलिए मानते हैं या ईश्वर को मानते हैं, इसलिए वह है। पत्थर को भगवान् मानने की बात से तो लगता है- ईश्वर है

नहीं, केवल हम मानते हैं, इसलिए है। मानने और होने में बड़ा अन्तर है। मानने पर केवल मानने वाले के लिए ही वह होता है, जो नहीं मानते उनके लिए वह नहीं हो सकता। इसके विपरीत होने पर सबके लिए मानने की बाध्यता है। उदाहरण के लिए इस बात को इस तरह समझा जा सकता है। एक व्यक्ति का एक पुत्र है, इसको पिता भी मानता है, पुत्र भी मानता है, दूसरे लोग भी मानते हैं। दूसरे व्यक्ति का पुत्र नहीं है, उसने किसी बालक को गोद लिया है, परन्तु वह उसे पुत्र मानता है, पुत्र भी उसे पिता मानता है, अन्य लोग भी वैसा ही स्वीकार करते हैं। एक मनुष्य किसी जानवर को बेटा कहता है, कुत्ते को बेटा कहता है, गाय को माता कहता है। मानने वाला व्यक्ति कहता है, कहता रहे, वह कुछ भी मानता रहे, परन्तु न प्राणी उसे अपना पिता मानता है, न अन्य लोग। इसी भाँति पत्थर को न तो दूसरा कोई भगवान् मानता है, न पत्थर स्वयं को भगवान् कहता है। भूमि को हिन्दू माता कहकर नमन करता है, मुसलमान ऐसा करने से इन्कार कर देता है। जब हम किसी वस्तु को भगवान् मानते हैं, तब वह वस्तु भगवान् होती नहीं, हम केवल उसे मानते हैं। इसी कारण जो जिसको चाहे भगवान् मान सकता है और वह वस्तु उसके लिए भगवान् होती है। यही भगवान् के अनेक होने का कारण है। कोई स्थान को भगवान् मानता है, कोई पिण्ड को, कोई पहाड़ को, कोई पशु को, कोई पृथ्वी को, कोई पानी को, कोई पुस्तक को, कोई व्यक्ति को। ईश्वर है हम इसलिए नहीं मानते, अपितु मानते हैं इसलिए ईश्वर है।

वस्तु के ईश्वर मानने में एक बाधा और आती है, वह बाधा है- हम वस्तु को ईश्वर मानते हैं या उसमें विद्यमान रूप को? क्योंकि ईश्वर के दर्शनों की इच्छा से वस्तु में रूप को ही मुख्य मानते हैं, अन्य गुणों का हमारे लिए बहुत महत्त्व नहीं होता। इस मान्यता में जो शंका है, वह यह कि यदि वस्तु को ईश्वर मानते हैं तो वस्तु मात्र ईश्वर होगी, तब यदि हमारा पत्थर भगवान् है तो ईसाई का, मुसलमान का या किसी और का पत्थर भी भगवान् ही होगा। यदि आकृति को भगवान् मानेंगे तो प्रश्न उठेगा- आकृति विशेष भगवान् है या आकृति सामान्य? आकृति सामान्य भगवान् मानने पर सभी आकृतियाँ भगवान् होंगी, हर आकृति भगवान् होगी। यदि आकृति विशेष को भगवान् मानें तो व्यवहार में ऐसा नहीं पाया जाता, अनेक वस्तुएँ भगवान् के रूप में पूजी जाती हैं और अनेक आकृतियों के रूप में भगवान् देखा जाता है, अतः भगवान् है इसलिए नहीं मानते, अपितु मानते हैं इसलिए है।

मूर्ति पूजा करते समय एक और प्रश्न उपस्थित होता है- हम मूर्ति को भगवान् मानते हैं, उसके दर्शन करने के लिए मन्दिर में जाते हैं। आश्चर्य की बात है कि जिससे मिलने और जिसके दर्शन करने के लिए मन्दिर में जाते हैं, हम उसके सामने आँखें बन्द करके क्यों बैठते या खड़े होते हैं? यदि हम किसी से मिलने किसी के घर पर जायें और उसके सामने बैठकर आँख बन्द करके 'बन्धु, आपके दर्शनों के लिए आया हूँ' ऐसा कहें तो गृहस्वामी उस व्यक्ति को अवश्य ही मूर्ख कहेगा, परन्तु मूर्ति के सामने सदा हम आँखें बन्द करके बैठना पसन्द करते हैं तो यह और भी अनुचित है। **जो मिल गया, उसका ध्यान नहीं किया जाता, ध्यान तो अज्ञात का किया जाता है। प्राप्त से तो व्यवहार किया जाता है।**

मनुष्य जब भी परमेश्वर का ध्यान या विचार करता है तो दो कार्य उससे स्वाभाविक रूप से होते हैं- एक आँखों का बन्द करना और हाथों का जुड़ना। हाथों का जुड़ना स्तुति का प्रतीक है, हाथों से स्तुति की जाती है। संस्कृत में हाथ को पाणि कहते हैं। पाणि कहने का कारण है- इससे स्तुति और व्यवहार किया जाता है। आँख बन्द करना किसका द्योतक है? इसको समझने के लिए हमें जीवन के प्रारम्भ को देखना होगा। जब बालक छोटा होता है, हम उसे संसार की वस्तुओं से परिचित कराते हैं। बालक धीरे-धीरे वस्तुओं को पहचानने लगता है। हम बार-बार वस्तु को दिखाकर उसका नाम पुकारते हैं। इस आवृत्ति से बालक वस्तु और नाम से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। फिर उसे वस्तु के दिखने पर नाम और नाम के सुनने पर वस्तु का बोध होता है। वह जब-जब भी नाम सुनता है, वस्तु की सम्भावित उपस्थिति की दिशा में देखता है। चूँकि ईश्वर नाम को भिन्न-भिन्न वस्तुओं से बालक का परिचय कराया गया होता है, अतः वह उन्हीं नाना पदार्थों को ईश्वर कहता, जानता और मानता है। ईश्वर के इस बाह्य परिचय के साथ प्रत्येक मनुष्य का ईश्वर के विषय में एक आन्तरिक परिचय होता है, जिसके कारण मनुष्य कहीं भी खड़ा हो चाहे मस्जिद में, मन्दिर में, चर्च में या गुरुद्वारे में, उसके मन में भगवान् के भाव आते ही उसके हाथ जुड़ जाते हैं और उसकी आँखें बन्द हो जाती हैं, क्योंकि मनुष्य का आन्तरिक भाव कहता है कि ईश्वर का साक्षात्कार एक आन्तरिक प्रक्रिया है। उसे आन्तरिक दृष्टि से ही देखा

जा सकता है, बाह्य चक्षुओं से नहीं। परमेश्वर का ध्यान आते ही हमारी दृष्टि अन्दर की ओर चली जाती है, अतः स्वाभाविक रूप से हमारी आँखें बन्द हो जाती हैं।

आगे की बात है कि यदि मूर्ति पूजा व्यर्थ है, असत्य है तो प्रश्न उठता है- मूर्ति पूजा चल क्यों रही है? चल ही नहीं रही, अपितु दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। लोग कहते हैं- इतनी बड़ी संख्या में लोग मूर्ति पूजा कर रहे हैं वे सब गलत कैसे हो सकते हैं? प्रथम बात पर विचार करते हैं। दुनिया में कोई भी बात अथवा कोई क्रिया नितान्त मिथ्या शत-प्रतिशत हानि करने वाली नहीं होती। पञ्चतन्त्र में कथा आती है अन्धे को मछली के स्थान पर उसे मारने के लिए साँप पकाकर देना चाहा। उस अन्धे को ही पक रहे साँप वाली कड़ाही चलाते रहने के लिए कह दिया, साँप के विषैले धुएँ से अन्धे को दिखने लग गया। उसने कुबड़े व्यक्ति को क्रोध में पीठ पर लात मारी तो वह व्यक्ति सीधा हो गया। यही हाल मूर्तिपूजा में भी है। दुःखी व्यक्ति को जो भी मिलता है, उसे बिना विचारे स्वीकार कर लेता है, उसी का सहारा ले लेता है, अतः जिसको मूर्ति का सहारा दे दिया जाता है, वह उसे पकड़े रहता है। व्यक्ति एक क्षण के लिए भी असहाय नहीं रहना चाहता, सत्य उसे मिलता नहीं, असत्य को भय के कारण छोड़ता नहीं। वैसे जो भी मूर्ति में सुख का अनुभव करता है, वह मूर्ति के उपासक की अपनी मनोदशा है, उसमें मूर्ति का कोई योगदान नहीं होता। मूर्ति जड़ है, अतः वह कोई सहायता नहीं कर सकती, परन्तु वहाँ का वातावरण और उपासक की मनःस्थिति उसे दुःखमय वातावरण से कुछ समय के लिए दूर ले जाती है। पुरानी परिस्थिति से निकलकर नई परिस्थिति में आने से मनुष्य का ध्यान बँटता है तथा कुछ समय के लिए वह तनाव से मुक्त हो जाता है।[१]

मनुष्य के साथ एक और बात भी उसे अपने पुरानेपन से दूर नहीं होने देती। मनुष्य को जीवन में जो विश्वास मान्यता, परम्परा, भोजन आदि पहले मिल जाता है, वह उसे सहज स्वीकार कर लेता है तथा उसे श्रेष्ठ मानता है, उसे बचाने का प्रयास भी करता है। कोई हिन्दू है, कोई मुसलमान है, कोई ईसाई है, कोई पौराणिक है उसे संस्कार, भोजन, मान्यता जैसी मिल जाती है, स्वाभाविक रूप से वह उन्हें स्वीकार कर लेता है। वह जल्दी से उसे नहीं छोड़ता। फिर प्रश्न उठता है- ऐसे व्यक्ति को बदलने का प्रयास क्यों करना चाहिए? मनुष्य बदल सकता है, यदि उसे प्राप्त से श्रेष्ठ विकल्प दिया जाए। मनुष्य स्वभाव से जहाँ है, यदि उसे उससे अच्छी वस्तु, उत्तम स्थिति, अधिक लाभ का अवसर मिले तो वह स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाता है। इसी प्रकार किसी व्यक्ति को नये विचार अच्छे लगते हैं तो वह उन विचारों को स्वीकार कर लेता है। **इसी कारण गुरु लोग, पैगम्बर लोग अपने अनुयायी और भक्तजनों को किसी दूसरे की बात सुनने से रोकते हैं।** मुस्लिम समुदाय इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। वह किसी दूसरी बात को स्वीकार करना तो दूर, अपने पैगम्बर से भिन्न बात को सुनना भी स्वीकार नहीं करता।

समाज में एक और तर्क है। संसार में अधिकांश लोग मूर्ति पूजा करते हैं और मूर्ति को ईश्वर मानते हैं। यह मान्यता नितान्त मिथ्या है कि संख्या अधिक होने से कोई बात सत्य होती है। यदि ऐसा स्वीकार कर लिया जाए तो अनपढ़ और मूर्खों की संख्या इस संसार में अधिक है और अधिक ही रहेगी, क्योंकि अनपढ़ उत्पन्न होते हैं, शिक्षित बनाये जाते हैं। जो वस्तु बनाई जाती है, वह स्वयं बनने वाली वस्तु से मात्रा व संख्या में सदा न्यून होगी, अतः यह तर्क स्वीकार्य नहीं हो सकता। यदि एक गाँव में एक हजार लोग रहते हैं, नौ सौ निन्यानवे अनपढ़ हैं और एक शिक्षित है तो समाज में किसको अच्छा समझा जाएगा? सत्य और संख्या में कोई तुलना नहीं की जा सकती।

शेष भाग अगले अंक में.....

ज्योतिष – परिचय शिविर

आर्यजगत् के प्रसिद्ध ज्योतिष-विद्वान्, श्री मोहन कृति आर्ष पत्रक (पंचांग) के निर्देशक-रचयिता श्री दार्शनेय लोकेश जी, नोयड़ा ने ऋषि उद्यान, अजमेर में शुद्ध ज्योतिष-परिचय का प्रशिक्षण देने के लिए चार दिन का समय प्रदान किया है। वे २५ से २८ जून २०१६ तक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे व ज्योतिष सम्बन्धी शंकाओं-समस्याओं का भी समाधान करेंगे। इसमें डेढ़-डेढ़ घण्टे की दो कक्षाएँ प्रातः ९.३० से ११ व दोपहर २ से ३.३० तक होंगी। प्रातः-सायं यज्ञ-प्रवचन यथावत् चलते रहेंगे।

इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रबुद्ध आर्यजन व ज्योतिष में रुचि रखने वाले महानुभव सम्पर्क कर सकते हैं। सूचना व स्वीकृति प्राप्त सज्जन ही इसमें भाग ले सकेंगे। संख्या सीमित रखी गई है। **सम्पर्क- आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) दूरभाष- ०९४१४००६९६१ (रात्रि- ८.३० से ९.३०)**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

इस्लाम का वैदिक रंग:- महाकवि अकबर इलाहाबादी की कुल्लियात का एक भाग कुछ वर्ष पूर्व मैंने क्रय किया था। महाकवि के काव्य का विशेष अध्ययन करके उनके चिन्तन पर कुछ लिखना चाहता था सो इस बार विश्व पुस्तक मेले से उनकी कुल्लियात का दूसरा भाग भी ले आया। कवि जी की हमारे महाकवि शङ्कर जी तथा पं. पद्मसिंह जी शर्मा पूर्व सम्पादक परोपकारी से विशेष आत्मीयता थी। यह अब देश नहीं जानता।

महर्षि दयानन्द ने इस युग में डंके की चोट से कहा कि मनुष्य को अपने शुभ-अशुभ कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। अन्य सब अवैदिक मत पंथ (हिन्दू सम्प्रदाय भी) पापों का क्षमा होना मानते हैं। हमारे विद्वानों के इस विषय पर मौखिक व लिखित अनेक शास्त्रार्थ हो चुके हैं। महर्षि और उसके शिष्यों के प्रयास से नये-नये इस्लामी साहित्य पर इस वैदिक सिद्धान्त की गहरी छाप पर एक पुस्तक लिखी जा सकती है। महाकवि अकबर जी का फारसी भाषा का एक पद्य पढ़कर विनीत झूम उठा-

ईं फित्ना कि बरपा शुद व ईं शोर कि बरखास्त,
इल्जाम ब गर्दूं मनेह अजमास्त कि बर मास्त।

अर्थात् यह जो झगड़ा व विपदा आ पड़ी है और हाहाकार मचा है, इसके लिये भाग्य को या ईश्वर को दोष मत दो। यह हमारे कर्मों का ही फल है जो लोग भोग रहे हैं। क्या यह इस्लाम का वैदिक रंग नहीं है?

श्री अनवर शेख ने इस्लाम में शैतान पर अपने दुष्कर्मों का दोष थोपने पर एक गम्भीर प्रश्न उठाया है। कुरान की छठी व उन्नीसवीं सूरत की एक-एक आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह जिसे चाहे पथ भ्रष्ट करे और जिसे चाहे सन्मार्ग दिखावे। अल्लाह ने मनुष्यों पर शैतान छोड़ रखे हैं, फिर भला वे पाप क्यों न करें? मौलाना मौदूदी आदि सब इन आयतों का यही अर्थ करते हैं। अनवर शेख जी का प्रश्न इस्लाम की वैदिक सोच का ज्वलन्त प्रमाण है। यह स्वस्थ सोच ऋषि की देन है।

वे बहुत प्रसन्न हुये:- विश्व पुस्तक मेले में लक्ष्मण जी जिज्ञासु ने मुझे कहा- ईरान के फारसी साहित्य को देखिये। इनसे कुछ चर्चा करो। मैंने उनसे पूछा-क्या प्रो. महेशप्रसाद मौलवी फाजिल जी कविवर उमर खैयाम की रुबाइयों का संस्करण मुझे देंगे? महेश प्रसाद जी की ईरान यात्रा की भी उनसे संक्षिप्त चर्चा की। मेरे मुख से महेशप्रसाद जी के उस दुर्लभ संस्करण की चर्चा करके वे बहुत हर्षित हुए। कहा- यह तो अभी उपलब्ध नहीं। कोई प्रकाशक इसे छपवायेगा ही। मुझे भी अच्छा लगा कि हमारे महान् विद्वान् की मौलिक देन को ईरान भूला नहीं है।

और वे चुप्पी साध गये:- लक्ष्मण जी मुझे मिर्जाइयों के स्टाल पर ले गये और कहा कि कुछ इनसे कहो। मैंने कहा- 'दुर्रे समीं' लेना चाहता हूँ। वे बोले- नहीं है। मैंने फिर 'तजकरः' माँगा। वे बोले- नहीं है। फिर एक और ग्रन्थ माँगा। कहा- नहीं है। उन्होंने स्वयं कोई बात न चलाई। मेरी हर बात पर न, न कहते गये और चुप्पी साध लेते। मैं भी समझ गया कि इनमें कोई मुझे जानता पहचानता है, अन्यथा ये तो हर नये शिकार की टोह में रहते हैं।

जमायते इस्लामी के स्टाल से मौलाना मौदूदी के कुरान-अनुवाद का अंग्रेजी अनुवाद दिया गया। कहा- यदि आप इसे पढ़ें, तो हम आपको देते हैं। मैंने कहा- ''भाई जब मेरे सिर के बाल काले थे, मैंने तभी नियमित पाठक के रूप में 'तर्जमानु-उल-कुरान' को ध्यानपूर्वक पढ़ा था।'' यह सुनकर उन्होंने सहर्ष मुझे वह ग्रन्थ भेंट कर दिया। यह उनकी मिशनरी सूझ थी कि वे ग्राहक को परखते व पहचानते थे।

और वे हमसे उलझ पड़े:- संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये पाठ्य पुस्तकें लेने **डॉ. धर्मवीर जी** के साथ मैं भी गया। सब पाठ्य पुस्तकों में पुराणों के उद्धरण, वाक्य व वचन भरे पाये। **धर्मवीर जी** ने कहा- संस्कृत प्रचार पुराणों से, पुराणों के लिये ही करते हो अथवा कोई वैदिक सूक्ति वेद वचन भी प्रचारित करते हो या वेद से सबको वञ्चित ही रखोगे? वे तो हमसे बहुत जोश से लड़ने लगे। कहा- जाओ हम आपसे बात ही नहीं करते।

संस्कृति व संस्कृत की आड़ में पौराणिक अंधविश्वास देश पर थोपे जा रहे हैं। ये लोग आज भी जन-जन को वेद के सुनने व पढ़ने का अधिकार देने को कतई तैयार नहीं हैं।

यज्ञ व यज्ञोपवीत का अधिकार सबको नहीं देते। संसद सदस्य व मन्त्री तक कलाई पर एक लाल धागा बाँध कर माथे पर तिलक लगाकर स्वयं को धर्मात्मा हिन्दू मान रहे हैं। विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना व बौद्धिक सम्पदा गायत्री मन्त्र का पाठ कितने राजनेता करते हैं? राम मन्दिर पर भाषण देने वाले बहुत हैं।

राम वनों में यज्ञ रचाते, सीता माता सन्ध्या करती। हो हल्ला सुन लो, जगराता ऐसा कहाँ जपन होता था? मैं इन दिनों कुछ नगरों में गया। दुर्गा मन्दिर, शनि मन्दिर, शिव मन्दिर, गीता मन्दिर, सन्तोषी माता का मन्दिर, हनुमान मन्दिर तो देखे, एक भी राम मन्दिर कहीं नहीं देखा। इसका कारण जानने का यत्न तो कीजिये। इसका कारण है-अवतारवाद, बहुदेववाद। एकेश्वरवाद का प्रचार न होना भी इसका एक मुख्य कारण है। नास्तिक वह ही नहीं जो ईश्वर को न माने, वह उससे भी बड़ा नास्तिक है जो ईश्वरेतर को ईश्वर मानकर उसकी पूजा करे।

आर्य समाज को अपयश से बचाओ:- व्यक्तियों में भी कमियाँ हो सकती हैं और संगठन में समाज में भी दोष हो सकते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जो स्वयं तो कोई साहसिक कार्य आज पर्यन्त कर नहीं सके, उन्हें समाज के संगठन के दोष गिन-गिन कर सुनाने व प्रचारित करने की बड़ी लगन लगी रहती है। **श्री सत्यपाल जी आर्य,** मन्त्री प्रादेशिक सभा से व कुछ अन्य सज्जनों से पता चला कि एक जन्मजात दुखिया ने अपनी एक पोथी में चुन-चुन कर ऐसे कई नाम दिये हैं, जिनकी अन्तिम वेला में समाज ने सेवा नहीं की। ऐसे विद्वानों, महात्माओं, साधुओं में श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी का नाम भी गिनाया गया है। लिखा है कि अन्तिम वेला में वे अपनी पुत्री के घर पर जा कर मरे।

यह बड़ी घटिया सोच है। हर कोई मानेगा कि समाज की जीवन भर सेवा करने वालों की अन्तिम वेला में समाज द्वारा सेवा व रक्षा की जानी चाहिये। अपनी कोई कमी है तो वह हमें दूर करनी चाहिये। जिस दुखिया ने दस नाम गिनाये हैं, उसको ऐसे दो चार नामों का भी पता न चला, जिनकी अन्तिम वेला में श्रद्धा भक्ति से आर्यसमाज ने सेवा की। क्या महात्मा नारायण स्वामी जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की, स्वामी आत्मानन्द जी की आर्यसमाज ने श्रद्धा भक्ति से सेवा नहीं की थी? पं. माधुर शर्मा जी, स्वामी सोमानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी सुव्रतानन्द जी, स्वामी भूमानन्द जी, पं. देवप्रकाश जी, मास्टर पूर्णचन्द जी आदि की स्वामी सर्वानन्द जी ने दिनरात सेवा नहीं की थी? क्या पं. नरेन्द्र जी को आर्यों ने फेंक दिया? चौ. वेदव्रत जी वानप्रस्थी ने धूरी में मेरे पास प्राण छोड़े। मैं तब अविवाहित ही था। स्वामी ज्ञानानन्द जी तो चलते-चलते चल बसे। जिस महापुरुष ने सूची बनाकर आर्यसमाज के अपयश फैलाने का यश लूटा है, उसे यह भी तो बताना चाहिये था कि उसने किस विद्वान् की, संन्यासी की कभी सेवा की?

यह झूठ है कि महात्मा आनन्द स्वामी जी को आर्यसमाज ने अन्त में नहीं पूछा। वे बेटी के घर मरने तो नहीं गये थे। यह आकस्मिक घटना थी। मैं स्वयं महात्मा जी से विनती करके आया कि कुछ समय के लिए मेरे पास आयें। कोई काम नहीं लेंगे। न कथा और न प्रवचन होगा। सेवा करेंगे। धूरी के बाबू पुरुषोत्तमलाल जी ने आग्रपूर्वक कहा कि आप मेरे पास चलें। मैं बढ़िया इलाज करवाऊँगा। चौबीस घण्टे आपकी सेवा में रहूँगा। जब तक आपकी शवयात्रा नहीं निकलेगी, मैं सब काम धंधे छोड़कर आपकी सेवा में रहूँगा।

क्या स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, महात्मा आनन्द स्वामी की सेवा से इनकार कर देते? क्या स्वामी सत्यप्रकाश जी की दीनानाथ जी ने जी जान से सेवा नहीं की थी? कुछ ऐसे नाम भी दुखिया जी गिना देते तो औरों को सेवा करने की प्रेरणा मिलती। हमारे आशय को आर्य जन समझें। महात्मा आनन्द स्वामी जी का अवमूल्यन मत करें। उनके सेवकों की कमी नहीं थी।

ऐसी श्रद्धा, ऐसी लगन और ऐसा जोश:- परोपकारिणी सभा को दो मास तक मैं कुछ सर्वथा अलभ्य परन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज सौंप दूँगा। इन बहुत पुराने दस्तावेजों की सुरक्षा के उपाय सभा करेगी। इनका

पूरा लाभ समाज को मिलना चाहिये। ये दस्तावेज हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी तीन भाषाओं में होंगे। अब तक 'आर्य मुसाफिर' मासिक के बारे में इतिहास प्रेमी व आर्य विद्वान् यही जानते हैं कि इस अत्यन्त लोकप्रिय मासिक का जन्म सन् १८९८ में महात्मा मुंशीराम जी की देखरेख में हुआ था। कुछ समय के लिए यह सद्धर्म प्रचारक के परिशिष्ट के रूप में भी छपता रहा। ऐसा संकेत मैंने कभी एक पुस्तक में दिया था। पं. लेखराम जी के बलिदान के अगले मास ही, अर्थात् अप्रैल में इसे डिमाई आकार में आरम्भ कर दिया गया। आर्य नेता दीवान बद्रीदास जी की देखरेख में यह आठ पृष्ठ की पत्रिका सद्धर्म प्रचारक के साथ भेजी जाती थी।

आश्चर्य होता है मुट्ठी भर आर्यों की लगन, श्रद्धा व जोश की कल्पना करके! इसके सभी ३८ अंक मेरे पास सुरक्षित हैं। देश-विदेश के आर्यों में पं. लेखराम के अमर बलिदान ने जिस चेतना व नवजीवन का संचार कर दिया, उसका वर्णन करने में यह लेखनी अक्षम है। छोटे-छोटे ग्रामों से पं. लेखराम स्मारक निधि के लिए दान पहुँचा। इस आठ पृष्ठीय पत्रिका की सामग्री का अपना ही महत्त्व है।

परोपकारी के प्रेमियो :- मैंने कई बार परोपकारी के उत्साही प्रेमियों से यह निवेदन किया है कि उन्हें जो जानकारी चाहिये अथवा जो प्रश्न पूछना हो वे सीधे सम्पादक परोपकारी या श्री सत्येन्द्रसिंह जी के पास भेजा करें। सम्बंधित विद्वान् उसका उत्तर अवश्य देंगे। एक शोध लेख की सामग्री चलभाष में देने से कुछ भूलचूक सम्भव है। चलभाष पर प्रश्न का उत्तर मिलने पर पूरक प्रश्न पूछे जाते हैं। कुछ प्रश्नों के पूरी प्रामाणिक जानकारी देने के लिए पाँच दस मिनट विचार करके कुछ कहना ठीक होता है-यथा स्वामी सम्पूर्णानन्द जी को कुछ कहना ठीक होता है, यथा स्वामी सम्पूर्णानन्द जी को हजरत मुहम्मद के तीन खलीफाओं के नाम, उनके हत्यारों व हत्या की घटना की जानकारी चाहिये थी। मैंने उन्हें कहा, दस मिनट सोच-विचार एवं मिलान के लिए दीजिये। ऐसे बता देने से मेरे बताने व आपके समझने में चूक होने से आर्यसमाज की प्रतिष्ठा घटेगी। वे विद्वान् हैं। समझ गये। ऐसे ही किसी प्रश्न का उत्तर देते हुए मैंने लखनऊ के कुछ आर्यवीरों से कहा।

परोपकारी में न जाने मेरी लेखनी की फिसलन से या कम्प्यूटरकार अथवा प्रूफ पढ़ने से कुछ चूक हो गई। हजरत मुहम्मद के तीन खलीफाओं की हत्या की चर्चा के प्रसंग में 'के' का 'को' छप गया। वाक्य कुछ ऐसा छप गया मानो हजरत मुहम्मद जी की हत्या कर दी गई। श्री अनिल जी ने अंक मिलते ही मुझे सूचना दे दी। कारण कुछ भी हो, मुझको इस चूक के होने से बड़ा दु:ख हुआ।

जोधपुर विषयक एक चटपटी हदीस:- यह सन् १९४६ की घटना है। स्यालकोट आर्यसमाज के तत्कालीन मन्त्री ला. हरिराम प्रधानाध्यापक एक मोटा ग्रन्थ लेकर समाज की वेदी पर बैठे और उस ग्रन्थ का एक पृष्ठ निकालकर यह बोले कि महर्षि ने रोगी होने पर मांसाहार की अनुमति दी है। इतना कहना था कि श्री पं. बनवारीलाल जी (पं. सत्यपाल जी पथिक के गुरु) ने बड़े जोश से उन्हें टोक दिया। सारे समाज ने पण्डित जी के साथ इस गप्प को झुठला दिया। वह ग्रन्थ श्री हरबिलास जी शारदा लिखित ऋषि जीवन था। न जाने कैसे वे इस इतिहास प्रदूषण-सिद्धान्त घात का अपने ग्रन्थ में प्रतिवाद करना भूल गये?

जब लक्ष्मीचन्द्र जी ने इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद किया तो मैंने उन्हें ये पंक्तियाँ निकालने को कहा। आपने एक कथन तो निकाल दिया, परन्तु दूसरा फिर रह गया। अब परोपकारिणी सभा उस ग्रन्थ का प्रकाशन कर रही है। मैंने फिर **श्रीमती ज्योत्स्ना जी** तथा **सत्येन्द्र जी** को वही बात कही। आपने इस पर श्रम तो अच्छा किया है, परन्तु सन्, सम्वत्, नाम, स्थान व तथ्यों की चूक के सुधार का कार्य मेरे लिये छोड़ दिया। इस ग्रन्थ के पृष्ठ ४७१ पर यह हदीस छप गई कि सन् १८८३ में आर्य समाज जोधपुर की स्थापना के समय कर्नल प्रतापसिंह ने ऋषि जी से पूछा-वह मांसाहारी होने के कारण आर्यसमाज का सभासद कैसे बन सकता है? ऋषि जी ने कहा-उसके सभासद बनने पर कोई आपत्ति नहीं और उसे प्रधान बना दिया गया।

यह कहानी विशुद्ध गप्प है। यह इतिहास प्रदूषण मण्डल के बहुत काम आने वाली हदीस है। न जाने हरबिलास जी जैसे सूझबूझ वाले इतिहासज्ञ ने बिना परखे इसे कैसे सत्य कथन मान लिया? कब जोधपुर समाज की

स्थापना हुई? जोधपुर से लिखे गये महर्षि के पत्रों में समाज स्थापना विषय में एक भी वाक्य है क्या? तत्कालीन किसी पत्र में इसका कोई संकेत है?

ऋषि के जीवन काल में स्थापित आर्यसमाजों की केवल दो सूचियाँ आज तक छपी हैं। इन दोनों को खोजने व छपवाने का सौभाग्य इस सेवक को प्राप्त है। इन दोनों सूचियों में जोधपुर में समाज के स्थापित होने का उल्लेख नहीं है, और तो और अवध रीव्यू में छपे कर्नल के जीवन परिचय व कर्नल की आत्म कथा (हिन्दी) में तो ऋषि जी के जोधपुर प्रवास पर ही दो चार पृष्ठ नहीं हैं। आर्यसमाज के इतिहास में मिलावट, हटावट, बनावट करके प्रदूषण फैलाने वालों ने वयोवृद्ध हरबिलास जी को भी घेर में ले लिया। सरदार रूपसिंह जी के नाम ऋषि जी का मांसाहार विषयक पत्र इस गप्प की पोल खोलता है। शेष फिर कभी।

ठाकुर मुकन्दसिंह जी की कविता:- ठाकुर मुकन्द सिंह जी ऋषिवर के सबसे पहले शिष्यों में से एक थे और सबसे लम्बे समय तक ऋषि के सम्पर्क में रहे। वे एक विनम्र सेवक थे। राहुल जी के पुरुषार्थ से यह तथ्य सामने आया है कि आप एक गम्भीर विद्वान् व कवि भी थे। आपकी पुस्तक 'तहकीका उलहक' के पृष्ठ ३१७ पर पद्य की ये पाँच पंक्तियाँ छपी हैं। इन्हें ऋषि के प्रति उनकी श्रद्धाञ्जलि समझें।

दयानन्द स्वामी का फैजान[१] है, जो लिखी है मैंने यह नादिर[२] किताब। मगर क्या करूँ छह बरस हो गये, कि त्यागा उन्होंने जहाने सराब[३]। दयानन्दी संवत हुए यह नये, इसी में मैं लिखता हूँ साले किताब[४] सरे हर बरक से अयाँ साल है, दयानन्दी संवत का है यह हिसाब। सरे वाह गुरुदेव कर दीजिये, तो है दूसरा साल भी लाजवाब।

ऋषि के सबसे पहले शिष्यों में से रचित ऋषि जी पर यह पहली कविता हमारे हाथ लगी है।

जाति पाँति का विष:- जातिवाद के विरुद्ध दहाड़ने वाले, दलितों के लिये घड़ियाली आँसू बहाने किसी भी दल व संस्था ने आज पर्यन्त दलितोद्धार के लिए प्राण देने वाले वीर रामचन्द्र, वीर मेघराज, भक्त फूलसिंह आदि का स्मारक बनवाया? उन्हें किसी ने कभी श्रद्धाञ्जलि दी? उनके नाम पर डाक टिकट जारी किया? किसी और संस्था ने दलितों के लिए कोई बलिदान दिया? आज दलित-दलित का शोर मचाने वाले कभी दलितों के लिये पिटे या घायल हुए? राहुल केजरीवाल आज कहीं भी पहुँच जाते हैं। जब फीरोजपुर के कारागार में नेहरू युग में सुमेर सिंह आर्य सत्याग्रही को पीट-पीट कर मारा गया, तब इन टर्राने वालों के दल व इनके पुरखा कहाँ थे? सज्जनो! देशवासियो!:-

नेहरूशाही ने दण्डा गुदा में दिया,
आप बीती यह कैसे सुनाऊँ तुम्हें?

आत्म हत्या व जातिवाद:- आत्महत्याएँ व जातिवाद की महामारियाँ फैल रही हैं। नेता लोग भाषण परोस रहे हैं। सामूहिक बलात्कार की घटनायें नित्य घटती हैं। दलों को, नेताओं को लज्जा आनी चाहिये। **हिन्दू धर्म व संस्कृति के नये-नये व्याख्याकार महाराष्ट्र में मन्दिर प्रवेश के लिये महिला सत्याग्रह पर आज भी वैसे ही मौन हैं, जैसे साठ** वर्ष पूर्व काशी विश्वनाथ मन्दिर में दलितों के साथ **प्रवेश** करने पर विनोबा जी की पिटाई पर इनके बड़ों ने चुप्पी साध ली थी। तब केवल आर्यसमाज ने भेदभाव व उस कुकृत्य की निन्दा की थी।

नारी की, कन्याओं की, संस्कृत की व संस्कृति की दुहाई देनेवाले नेता काशी जाते रहते हैं। काशी में कन्याओं के वेदाध्ययन के अधिकार की ध्वजा फहराने वाले और जाति-पाँति का विध्वंस करनेवाले पाणिनि गुरुकुल काशी की इनमें से किसने यात्रा की? इन्हें विवेकानन्द स्वामी तो याद रहते हैं, भेदभाव का दुर्ग ढहाने वाले काशी का यह गुरुकुल दिखाई ही नहीं देता। केजरीवाल भी तो गंगा स्नान का कर्मकाण्ड करके काशी यात्रा कर आया।

पाद टिप्पणी

१. उपकार २. उत्तम, अद्भुत ३. नाशवान, अनित्य ४. पुस्तक लेखन का वर्ष

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। **यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ** में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार** का भुगतान नहीं किया जाता है।

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं** जाती हैं। स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहें हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पुरी में रहने वाले 'पुरुष' दो हैं

- इन्द्रजित् देव

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं कि ईश्वर के अनेक नाम हैं। ये नाम गुणवाचक, सम्बन्धवाचक, कर्मवाचक हैं। इनके अतिरिक्त एक नाम मुख्य व निज (= ओ३म्) है। इसी समुल्लास में एक नाम 'पुरुष' भी है। इस नाम के आधार पर एक पौराणिक विद्वान् पं. गिरिधर शर्मा ने एक शास्त्रार्थ में तत्कालीन आर्य प्रतिनिधि सभा, पञ्जाब के प्रधान महात्मा मुंशीराम (=स्वामी श्रद्धानन्द जी) से एक शास्त्रार्थ में प्रश्न किया था- "स्वामी दयानन्द ने ईश्वर को पुरुष घोषित किया है। यह प्रमाण वेद में नहीं है तो स्वामी जी ने क्यों ऐसा घोषित किया?" इस प्रश्न के उत्तर में महात्मा मुंशीराम जी ने कहा कि वेद में ईश्वर को पुरुष कहा गया है-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्य वर्णं तमसः परस्तात्
तमेवविदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था बिद्यतेऽयनाय।

- यजुर्वेद ३१-१८

अर्थात् मैं ऐसे महानतम् पुरुष को जानता हूँ जो आदित्य-सूर्य के समान तेजस्वी, अन्धकार से परे है। वे ब्रह्माण्ड रूपी नगरी में निवास करने वाले प्रभु पुरुष हैं, सर्वव्यापक हैं, सर्वाधिक महान् हैं, विभु हैं अथवा 'मह पूजायाम्' पूजा के योग्य हैं। उस ज्योतिर्मय प्रभु को जानकार ही मनुष्य मृत्यु को लाँघ जाता है तथा मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। अन्य कोई उपाय या मार्ग नहीं है।

वेद से कुछ अन्य मन्त्रों में भी ईश्वर को पुरुष कहा गया है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिंविश्वतो वृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम्।

- ऋ. १०-९०-१

भावार्थः- वे पुरुष विशेष प्रभु 'अनन्त सिरों, आँखों व पाँव' वाले हैं। सारे ब्रह्माण्ड को आवृत करके इसको लाँघकर रह रहे हैं।

पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिहति।

ऋ. १०-९०-२

भावार्थः- ब्रह्माण्डनगर में निवास व शयन करने वाले प्रभु सब प्राणियों पर शासन करने वाले हैं। इनके जो कर्मानुसार जन्म को ग्रहण कर चुके हैं तथा जो समीप भविष्य में ही जन्म ग्रहण करेंगे, इन प्राणियों के भी वे प्रभु ईश हैं।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।

- ऋ. १०-९०-३

भावार्थः- समस्त ब्रह्माण्ड पुरुष विशेष प्रभु की महिमा का प्रतिपादन कर रहा है। वे प्रभु इस ब्रह्माण्ड से बहुत बड़े हैं। यह ब्रह्माण्ड तो प्रभु के एक देश में ही है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।

- यजुर्वेद ३१/४

भावार्थः- यह पूर्वोक्त परमेश्वर कार्य जगत् से पृथक् तीन अंश से प्रकाशित हुआ।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षण पुरुषं जातमग्रतः

- यजुर्वेद ३१/९

भावार्थः- हम अपने हृदयों को पवित्र बना वहाँ प्रभु की ज्योति को जगाएँ।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।

- य. ३१/३

भावार्थः- सारा ब्रह्माण्ड प्रभु के एक देश में है।

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।

- य. ३१/५

भावार्थः- यह संसार प्रभु द्वारा प्रारम्भ में एक विराट् पिण्ड के रूप में उत्पन्न किया जाता है।

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।

- ऋ. १-९०-२

भावार्थः- यह जो कुछ भूत, वर्तमान और भविष्य है, यह सब उपलब्ध जगत् इस जगत् के आधार सनातन भगवान् में ही है।

वेदों में अन्य प्रमाण भी उपलब्ध हैं, परन्तु विस्तारभय से वेद-प्रमाण और न देकर दर्शनों के कुछ प्रमाण उद्धृत हैं-

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः।

- योगदर्शनम् १/२४

अर्थः- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश- इन पाँच क्लेशों, शुभाशुभ कर्मों, कर्मफल तथा वासनाओं से असम्बद्ध पुरुष विशेष ईश्वर कहलाता है।

आत्मा का भी यत्र-तत्र पुरुष अर्थ में प्रयोग किया

गया हैं:-

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। - वेद

अर्थ:- हे जीव! तुम ऊर्ध्वगतिवाला हो। तेरा नाम 'पुरुष' है। तेरी सार्थकता पुरुषार्थ करने में है।

अथ त्रिविधदु:खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थ:।

- सांख्य दर्शन १/१

अर्थ:- आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक- **इन तीन प्रकार के दु:खों से अतिशय निवृत्ति परम पुरुषार्थ (=पुरुष का प्रयोजन) है। इसका प्रतिपादन करने वाले शास्त्र का प्रारम्भ करते हैं।**

न सर्वोच्छित्तिरपुरुषार्थत्वादि दोषात्।

- सांख्य दर्शन ५/७४

अर्थ:- आत्मा और अनात्मा सबका उच्छेद (= नाश) भी मोक्ष नहीं है, अपुरुषार्थता होने आदि दोष से।

पुरुषबहुत्वं व्यवस्थात:। - सांख्य दर्शन ६/४५

अर्थ:- पुरुष (= आत्माएँ) बहुत हैं, व्यवस्था के कारण।

न पौरुषेयत्वं तत्कर्तु: पुरुषस्याभावात्।

- सांख्य दर्शन ५/४६

अर्थ:- शब्दराशि वेद भी पौरुषेय नहीं है (=किसी पुरुष अर्थात् आत्मा द्वारा रचे नहीं गए) उसकी रचना करने वाले पुरुष के न होने से।

ना पौरुषेयत्वान्नित्यत्वमङ्कुरादिवत्।

- सांख्य दर्शन ५/४८

अर्थ:- किसी पुरुष (= आत्मा) द्वारा न लिखे होने से वेदों का नित्य होना नहीं कहा जा सकता, अङ्कुरादि के समान।

यस्मिन्नदृष्टेऽपिकृतबुद्धिरुपजायते तत् पौरुषेयम्।

- सांख्य दर्शन ५/५०

अर्थ:- जिस वस्तु में कर्त्ता के द्वारा अदृष्ट होने पर भी यह रची गई है, ऐसी बुद्धि होती है, वह वस्तु पौरुषेय (= आत्मा द्वारा रची गई) कही जाती है।

सत्व पुरुषयो: शुद्धिसाम्ये कैवल्यम्।

- योग दर्शनम् ३/५४

अर्थ:- सत्व और पुरुष (= आत्मा, जीव) की शुद्धि समान होने पर कैवल्य (= मोक्ष) हो जाता है।

ब्राह्मण: पुरं वेदेति पुरुष उच्यते।

-अथर्ववेद १०/२/३०

अथर्व. की दृष्टि से ''पुरं वेत्तीति पुरुष:'' ऐसा पुरुष निर्वचन है। श्रुति की दृष्टि से यह निर्वचन जीव (= आत्मा) का ही प्रतीत होता है, क्योंकि ब्रह्मपुर का ज्ञान वही करेगा। जहाँ ब्रह्म ओत-प्रोत है, वह सब ही ब्रह्म का पुर हुआ तथा वह है सर्व जगत्, उसे सम्पूर्णत: प्रभु ही जानते हैं, इस दृष्टि से वे भी पुरुष कहे जा सकते हैं।

आत्मा को 'पुरुष' क्यों कहते हैं? वह पू: अर्थात् शरीर में रहता है, अत: पुरिपाद: कहाता हुआ पुरुष कहा जाने लगा अथवा उसमें सोता है, वह पुरिशय होता हुआ **'पुरुष' हो गया- पुरुष: पुरिपाद: पुरिशय:।**

पूरयति अन्त: अन्तर पुरुषम् अभिप्रेत्य- अर्थात् अन्दर से सम्पूर्ण जगत् को भरपूर कर रहा है, अन्तर्यामी होने से सर्वत्र व्याप्त है, ऐसा विग्रह परमेश्वर को लक्ष्य करके ही किया जाता है।

इससे सिद्ध होता है कि 'पुरुष' शब्द का अर्थ प्रसंग व परिस्थिवशात् आत्मा तथा परमात्मा - इन दोनों में से कोई भी अर्थ ग्रहण किया जाना चाहिए।

आत्मा रूपी 'पुरुष' और परमात्मा रूपी 'पुरुष' में अन्तर भी समझना अपेक्षित है। इस विषय में निवेदन यह है परमात्मा विशेष महान्तम् पुरुष है। यह यजुर्वेद के मन्त्र ३१/१८ में तथा योग दर्शन के सूत्र १/२४ में इस लेख में उद्धृत किया जा चुका है, जबकि आत्मा सामान्य है। परमात्मा व आत्मा काल की दृष्टि से अनन्त हैं, परन्तु व्यापकता की दृष्टि से परमात्मा सर्वत्र व्यापक है और आत्मा की व्यापकता सीमित है। आत्मा सत् व चित् है तो परमात्मा सत्, चित् तथा आनन्द स्वरूप है। आत्मा सर्वशक्तिमान् नहीं है, अर्थात् उसे करणीय कार्य करने के लिए दूसरे व्यक्तियों तथा परमात्मा से सहायता लेनी पड़ती है, जबकि परमात्मा अपने कार्य करने के लिए किसी की भी सहायता की आवश्यकता नहीं समझता। परमात्मा अनुपम है, परन्तु आत्मा अनुपम नहीं है। परमात्मा सृष्टिकर्त्ता है, परन्तु आत्मा ऐसा नहीं है।

ईश्वर अभय है तो जीव अधिकतर भयशील ही रहता है। परमात्मा सर्वान्तर्यामी है, परन्तु आत्मा अन्तर्यामी हो नहीं सकता। परमात्मा सर्वज्ञ है, परन्तु आत्मा अल्पज्ञ है। आत्मा शरीर को प्राप्त करता है, परन्तु परमात्मा ने कभी शरीर धारण नहीं किया तथा न ही ऐसा करेगा। परमात्मा अकाम है, परन्तु आत्मा ऐसा नहीं हो सकता। कुछ अन्य भी परस्पर भेद हैं।

- चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर (हरियाणा)

संस्कृत साहित्य में 'डायरी' विधा

- डॉ. अंजना शर्मा ज्योति बाला

संस्कृत-साहित्य अत्यन्त विस्तृत एवं समृद्ध है। वेदों के अति गम्भीर एवं रहस्यमय ज्ञान से लेकर सामान्य जन-जीवन के मनोविनोद से सम्बन्धित सम्पूर्ण वैभव संस्कृत साहित्य में सुरक्षित है। वैदिक समय से प्रवाहित इसकी धारा आधुनिक काल में भी न केवल सतत प्रवहणशील है, बल्कि युगानुरूप प्रवृत्तियों को आत्मसात् करती हुई विशालतर और गम्भीर रूप में आगे बढ़ा रही है। गद्य-पद्य आदि सभी रूपों में नवीन विधाओं का विकास एवं विस्तार इसको अभूतपूर्व बना रहा है। इसमें गद्य साहित्य की अनेक विधाएँ आधुनिक युग में प्रचलित हैं जो इसे समृद्ध कर रही हैं- जैसे लघुकथा, एकांकी, निबन्ध, लेख, रेखाचित्र, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, जीवनी, रिपोतार्ज आदि। इनसे पृथक् एक विधा है - 'डायरी' इस विधा में लेखन सर्वप्रथम डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने किया है।

डायरी का अर्थ - अंग्रेजी का 'डायरी' शब्द लैटिन के डायस शब्द से बना है जो दैनंदिता का बोधक है। जब कोई व्यक्ति तिथि सन्-संवत् आदि का उल्लेख करते हुए घटनाओं को उसी क्रम में लिपिबद्ध करता है, जिस क्रम से उसके जीवन में घटित हुई हैं (या जिस क्रम से उसने उन्हें अपने जीवन-काल में देखा-सुना अथवा सोचा-समझा है) और उसकी वैयक्तिक अनुभूति का एक अविभाज्य अंश बन गई हों, तब डायरी विधा जन्म लेती है।[१]

डायरी को जीवन का सबसे अधिक प्रामाणिक दस्तावेज माना गया है, क्योंकि डायरी लेखक अपने जीवन की घटनाओं, परिस्थितियों, स्वजनों और परायों के व्यवहार, तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक हलचलों को जिस तरह देखता, परखता, भोगता, जानता, पहचानता है और उस पर जहाँ जैसी प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करना चाहता है, सबको यथातथ्य वर्णित कर देता है।[२]

डायरी निजी होती है। इसे लेखक प्रकाशन के उद्देश्य से नहीं लिखता। वह भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा निजता का विवेचन होता है। कलात्मकता की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। यहाँ लेखक की भावनाएँ निर्झर की तरह अपना रास्ता बना लेती हैं। शिल्प के प्रति यदि लेखक लालायित है तो स्वाभाविकता समाप्त हो जाती है।[३]

एक अच्छी डायरी में स्पष्टता, सहजता, संक्षिप्तता, सुसंगठितता, रोचकता आदि गुणों का समावेश होता है। डायरी में देश, काल और वातावरण का बड़ा महत्त्व होता है। उसकी पृष्ठभूमि की सहायता से लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट होकर सामने आ जाता है।[४]

डायरी का विभाजन -

डायरी का विभाजन अनेक आधारों पर होता है। कवि, कथा-लेखक, आलोचक, राजनीतिक पुरुष समाजसेवी आदि विभाजन लेखकों के आधार पर होता है। विषय वस्तु के आधार पर प्रकृति चित्रण प्रधान, सामाजिक, सांस्कृतिक विषय प्रधान डायरियाँ लिखी जाती हैं। किसी विशेष स्थान का चित्रण भी डायरी में होता है।[५]

डायरी का प्रमुख उद्देश्य आत्म-विवेचन और आत्म-विश्लेषण होता हैं। लेखक तो अपने भावों, विचारों और घटनाओं को डायरी में सहज रूप से अभिव्यक्ति करता है। लेखक की डायरी से पाठक को प्रेरणा मिलती है, जानकारी और ज्ञान भी।

डायरी के रचना आधार तत्त्व -

डायरी के रचना तत्त्व निम्न प्रकार से हैं। इनके आधार पर एक डायरी की रचना होती है-

१. व्यक्तिगत जीवन के क्रमिक चित्र
२. आंतरिक सत्य
३. तल्लीनता
४. सहजता
५. कलात्मकता के प्रति उदासीनता

१. व्यक्तिगत जीवन के क्रमिक चित्र -

डायरी निजी लेखन है, अतः इसमें लेखक के व्यक्तिगत जीवन को अभिव्यक्ति मिलती है। नितान्त निजी क्षणों में कोई भी व्यक्ति जो सोचता-विचारता है, उसे

अपनी डायरी में लिखता है। किसी-किसी व्यक्ति को प्रतिदिन डायरी लिखने की आदत होती है, कुछ व्यक्ति एक-दो अथवा कुछ दिनों के अन्तराल के बाद डायरी लिखते हैं, परन्तु फिर भी यह जरूरी होता है कि डायरी में तिथि क्रम बना रहे। डायरी लेखक के व्यक्तिगत जीवन का सबसे प्रमाणिक दस्तावेज होती है।[५]

२. आंतरिक सत्य - डायरी का दूसरा महत्त्वपूर्ण विधायक तत्त्व आंतरिक सत्य है। डायरी में लेखक की निजी अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ विचार आदि सत्यता के साथ अंकित रहती हैं, इसलिए निजी अथवा आंतरिक सत्य का उद्‌घाटन डायरी का मुख्य तत्त्व होता है। इसी से जुड़ा तत्त्व है- आत्मनिरीक्षण, आत्म-विश्लेषण और आत्म-सम्बोधन। लेखक स्थितियों, घटनाओं और परिस्थितियों के बीच अपने को रख कर आत्मविश्लेषण करता है, इसलिए डायरी प्राय: आत्म परिष्करण और आत्ममुक्ति का सबसे अच्छा साधन भी है।

३. तल्लीनता -

डायरी लेखक तल्लीनता के साथ अपनी अनुभूतियों, प्रतिक्रियाओं, टिप्पणियों आदि को शब्दों से बाँधता है। नितान्त निजी क्षणों में और प्राय: एकान्त में वह डायरी लिखता है, इसलिए अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा डायरी लेखन में तल्लीनता सर्वाधिक रहती है। इस तल्लीनता के तत्त्व के कारण डायरी-लेखक समय और स्थान की सीमा से दूर चला जाता है। जो समीक्षक डायरी में कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं मानते, वे केवल सत्य ही डायरी के लिए आवश्यक मानते हैं।

४. सहजता -

तल्लीनता से जुड़ा डायरी का महत्त्वपूर्ण उपकरण सहजता है। तल्लीन होकर सहज रूप में व्यक्ति अपनी डायरी लिखता है। इन दोनों के कारण वह दुराव-छिपाव और बनावट (कृत्रिमता) से बचा रहता है। कोई झूठ उसके पास नहीं फटक पाता।

इसलिए डायरी लेखक के लिए सहजता अत्यावश्यक है।

५. कलात्मकता के प्रति उदासीनता -

इन दोनों तल्लीनता और सहजता से प्रभावित डायरी का अंतिम विधायक उपकरण है-कलात्मकता के प्रति उदासीनता। वास्तव में यह डायरी का गुण है। डायरी लेखक यह सोच कर नहीं लिखता कि वह कोई कलात्मक वस्तु सृजित कर रहा है। प्राय: डायरियाँ यह सोच कर भी नहीं लिखी जाती कि इनका प्रकाशन किया जाएगा, इसलिए इन्हें कलात्मक होना चाहिए। डायरी लेखक यदि विचारवान, सिद्धहस्त लेखक, कलाकार, दर्शनिक हुआ तो सहज शिल्प उसकी डायरी को स्वत: ही कलात्मक बना देगा।

कलात्मकता या शिल्प के प्रति यदि उसके मन में आग्रह रहेगा तो वह अपनी डायरी के प्राकृतिक रूप को विकृत कर लेगा। डायरी-लेखक को कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि वह अपनी यह डायरी किसी को प्रभावित करने के लिए किसी की आलोचना या प्रशंसा करने के लिए अथवा निश्चय ही एक उत्कृष्ट साहित्यिक कृति के रूप में लिख रहा है। उसे तो सहज भाव से तल्लीन होकर अपने मन की बातें अंकित करते चलना चाहिए, तभी वह डायरी सच्ची डायरी होगी।

डायरी में लिखे गए दैनिक अनुभव एक-दूसरे से अलग-थलग कटे हुए होते हैं। उनमें पूर्वापर का अभाव होता है। डायरी पढ़ते समय घटनाओं के पूर्वापर सम्बन्धों में पारस्परिक भाव उत्पन्न नहीं होता।[७]

डायरी में वर्णन न होकर मन की प्रतिक्रिया आत्मविश्लेषण एवं मनस्थिति अंकित की जाती है। डायरी का सत्य अपेक्षाकृत अधिक पूर्ण आंतरिक और आत्मीय होता हैं। डायरी लेखकर प्राय: कटु से कटु सत्य से भी दूर नहीं भागता। किसी भी अवाछित प्रसंग को ढकना डायरी-लेखक के लिए उचित नहीं, क्योंकि वह तो यह सोच कर लिखता है कि जो कुछ मैं लिख रहा हूँ, वह मेरा निजी है, मेरा अपना है। क्योंकि डायरी को सभी के पढ़ने की वस्तु नहीं माना गया है, अत: डायरी को हम विभिन्न 'मूड्स' के स्नेप्स कह सकते हैं, अर्थात् हम उन्हें मन के चित्र भी कह सकते हैं।

डायरी ग्रन्थ -

हिन्दी के डायरी लेखन का प्रारम्भ १९३० के आसपास माना जाता है। नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ इसके प्रथम लेखक

माने जाते हैं। नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ की 'जेल डायरी' के नाम से प्रकाशित हुई।[८]

अजित कुमार की डायरी 'अंकित होने दो' के नाम से छपी है। इलाचन्द्र जोशी की 'डायरी के नीरस पृष्ठ' से प्रसिद्ध हुई। रामकुमार वर्मा की 'वाराणसी की डायरी' हिन्दी गद्य साहित्य में पाई जाती है। गजानन माधव मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी', नामवर सिंह की 'मलयज की डायरी' (संपादित) प्रमुख हैं।[९]

इसके अतिरिक्त घनश्याम बिड़ला की 'डायरी के कुछ पन्ने' नाम की डायरी बहुत महत्त्वपूर्ण व उल्लेखनीय है। गाँधी जी की दिल्ली डायरी भी प्रकाशित हुई। महादेव भाई देसाई की डायरी गुजराती में लिखी गई। मनुबेन गाँधी की गुजराती से अनुदित डायरी भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह डायरी गाँधी जी के जीवन की घटनाओं का सच्चा दस्तावेज है। यह चार भागों में विभाजित है-

१. एकला चलो रे

२. कलकत्ते का चमत्कार

३. बिहार की कौमी आग में

४. दिल्ली डायरी

अमृता प्रीतम की डायरी 'सात मुसाफिर' प्रकाशित हुई। जमनालाल बजाज की डायरी गुजराती से अनुदित होकर हिंदी में 'जमनालाल की डायरी' नाम से प्रकाशित हुई।[१०]

संस्कृत डायरी ग्रन्थ -

संस्कृत में अभी तक एक ही डायरी ग्रन्थ लिखा गया है, सर्वप्रथम जिसकी रचना डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने की है। 'दिने दिने याति मदीयजीवितम्' नामक इस डायरी ग्रन्थ का लेखन काल दिनांक १४.०१.२००६ से दिनांक १९.०६.२००७ तक है। इसमें लेखक ने अपने जीवन, स्वास्थ्य, यात्रा-वर्णन, क्रियाकलाप, मनोभाव व अन्य विशिष्ट वृत्तों का वर्णन किया है। व्यक्तिगत जीवन के अनेक पक्षों का स्पष्ट प्रकाशन इस डायरी को विशिष्ट बनाता है।[११]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि संस्कृत साहित्य में डायरी नवीन विधा है और इस विधा का लेखक विशेष संवेदनशील होता है और वह आत्माभिव्यक्ति की पुकार को नकारता नहीं है। वह तनिक अवकाश चुराकर किसी एकान्त कोने में डायरी लेखन से भी नहीं चूकता। डायरी में मन खोलकर लिखते हैं। डायरी अपने लिए लिखी जाती है, दूसरों के लिए नहीं अन्ततः डायरी को लेखक के जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज मानते हैं।

सन्दर्भ सूची

१. साहित्यिक विधाएँ- पुनर्विचार-हरिमोहन पृ. २५९ वाणी प्रकाशन-२

२. गद्य की नयी विधाएँ-माजदा असद-पृ. २२ सुभाष पार्क एक्सेटशन नवीन शाहदरा - दिल्ली-३२

३. गद्य की नई विधाएँ- माजदा असद- पृ. २२

४. गद्य की नई विधाओं का विकास- आजदा असद- पृ. ६७ ग्रन्थ अकादमी-नई दिल्ली-२

५. गद्य की नई विधाओं का विकास- माजदा असद पृ. ६८ ग्रन्थ अकादमी-नई दिल्ली-२

६. साहित्यिक विधाएँ-पुनर्विचार-डॉ. हरिमोहन वाणी प्रकाश-नई दिल्ली-२

७. हिन्दी आत्मकथा स्वरूप एवं साहित्य-पृ. ३१ डॉ. कमलेश सिंह

८. गद्य की विविध विधाएँ-डॉ. बापूराव देसाई-पृ. १९ विनय प्रकाशन, कानपुर-९५

९. हिन्दी साहित्य वस्तुनिष्ठ परिदृश्य (प्रायोगिक रूप सहित) रमेश कुमार रोहिल्ला पृ. २५७ के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दरियागंज,नई दिल्ली

१०. गद्य की नई विधाओं का विकास- माजदा असद पृ. ७१-७२ ग्रन्थ अकादमी नई दिल्ली २००२

११. दिने-दिने याति मदीयजीवितम् - सत्यव्रत शास्त्री पृ. ११-२६६ विजया बुक्स सुभाष पार्क नवीन शाहदरा, दिल्ली-२०११

- राम-ईश इन्टरनेशनल स्कूल, ३, नॉलेज पार्क-१, कासना रोड, नोएडा-२०१३०८

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

प्राणोपासना-२

- तपेन्द्र कुमार

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि मुनष्य प्राण द्वार से प्राण को परमात्मा में युक्त करके तथा योगाभ्यास द्वारा प्राण नाड़ियों में ध्यान करके परमानन्द मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। महर्षि यह भी घोषणा करते हैं कि हृदयदेश के अतिरिक्त दूसरा परमेश्वर के मिलने का कोई उत्तम स्थान व मार्ग नहीं है। पूर्व उल्लेख अनुसार प्राण अचेतन भौतिक तत्त्व है, शुद्ध ऊर्जा है तथा हृदय प्राण का केन्द्र है। यह हृदय स्थूल इन्द्रिय नहीं है। प्राणों में जीवात्मा प्रतिष्ठित है तथा परमात्मा हृदयाकाश में रहने वाले जीवात्मा के मध्य रहता है।

१. **श्वास-प्रश्वास एवं प्राण**- जो वायु बाहर से भीतर को जाता है, उसको श्वास और जो भीतर से बाहर आता है, उसको प्रश्वास कहते हैं। परन्तु श्वास के द्वारा जो वायु शरीर में जाती है तथा जो वायु बाहर आती है, वह प्राण नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास **प्राणाऽपान-निमेषजीवन.........चात्मनो लिङ्गानि।** (वैशेषिक) की व्याख्या करते हुए महर्षि लिखते हैं, ''(प्राण) जो भीतर से वायु को बाहर निकालना, (अपान) बाहर से वायु को भीतर लेना.......।'' सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में प्राणमय कोश के सम्बन्ध में लिखा है, ''दूसरा'''प्राणमय' जिसमें 'प्राण' अर्थात् जो भीतर से बाहर आता, 'अपान' जो बाहर से भीतर आता......**प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य।** योग के भाषार्थ में भी भीतर के वायु को बहार निकाल कर सुखपूर्वक रोकने का अभ्यास बार-बार करने से प्राण उपासक के वश में होने जाने का उल्लेख महर्षि ने किया है। स्वामी सत्यबोध सरस्वती जी के अनुसार ये (श्वास-प्रश्वास की) क्रियाएँ शरीर में प्राणों का कथित ऊपर व नीचे की गति कराने का एक मात्र साधन है। जब प्राणी श्वास लेता है तो वायु शरीर में जाती है तथा शरीर की प्राण नाड़ियों में प्राण की गति नीचे की ओर हो जाती है- यह अपानन क्रिया है। जब प्राणी प्रश्वास लेता है, अर्थात् दूषित वायु बाहर निकालता है तो शरीर की प्राण नाड़ियों में प्राण की गति उर्ध्व गति होती है-यह प्राणन क्रिया है। इस प्रकार श्वास-प्रश्वास प्राणक्रियाओं का साधन है। श्वास-प्रश्वास में शरीर के भीतर जाने वाली वायु तथा बहार आने वाली वायु प्राण नहीं है, वह आक्सीजन आदि गैसों का मिश्रण है। प्राण किन्हीं गैसों आदि का मिश्रण नहीं है बल्कि शुद्ध ऊर्जा है।

२. **प्राण के पाँच भेद- एषोऽणुरात्मा चेतसा विदितव्यो यस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविवेश।** मुण्डकोपनिषद् ३.१.९ के भाषार्थ में पण्डित भीमसेन शर्मा लिखते हैं, ''(यस्मिन्) जिस शरीर में (प्राणः) प्राण (पञ्चधा) प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान नाम पाँच प्रकार के भेदों से (संविवेश) अच्छे प्रकार प्रविष्ट हो रहा है.....।''

यथा सम्राडेवाधिकृतान्विनियुङ्क्ते एतान्ग्रामानेतान्ग्रामानधितिष्ठस्वेत्येवमेवैष प्राण इतरान्प्राणान्पृथक्पृथगेव संनिधत्ते। (प्रश्न ३.४) का अर्थ करते हुए डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखते हैं, ''जैसे सम्राट् अपने अधीन कर्मचारियों को अपने-अपने काम में नियुक्त करता है, किसी को इस तथा किसी को उस ग्राम में अधिष्ठाता बनाता है, इसी प्रकार यह प्राण अन्य प्राणों को पृथक्-पृथक् अपने-अपने काम में नियुक्त करता है।'' स्वामी सत्यबोध सरस्वती जी के अनुसार जीवों के शरीरों में प्राण तत्त्व तो एक ही है, कार्यभेद से उसके अनेक नाम हो जाते हैं। -प्र+अन=प्राण, उप+अन=अपान, सम+आ+अन =समान, उद+आ+अन= उदान, वि+आ+अन= व्यान। इस प्रकार प्र, अप आदि उपसर्गों को 'अन' के साथ जोड़ने से प्राण, अपान, समान,उदान और व्यान शब्द सिद्ध हो जाते हैं।

वृहदारण्यक उपनिषद् १.५.३.........**प्राणोऽपानोव्यान उदानः समानोऽन इत्येतत्सर्वं प्राण एव......** का अर्थ करते हुए महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज लिखते हैं, ''(प्राणः अपानः व्यानः उदानः) प्राण, अपान, व्यान, उदान, (समानः अनः इति) और समान 'अन'- प्राण है। (एतत् सर्वं प्राणः एव) ये सब (पाँचों) प्राण ही हैं।'' इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राण तत्त्व एक ही है जो शरीर में अपने को पाँच भागों में

विभक्त कर पाँच प्रकार के कार्यों को सम्पादित करता है। प्राण का शास्त्रीय नाम 'अन' ही है।

३. प्राणों की स्थिति एवं कार्य- प्रश्नोपनिषद् तृतीय प्रश्न में ''**पायूपस्थेऽपानं चक्षुःश्रोत्रेमुखनासिकाभ्यां प्राणः स्वयं प्रतिष्ठ्ते मध्ये तु समानः।.......अत्रैतदेकशातं नाडीनां......भवन्त्यासु व्यानश्चरति। अथैकयोर्ध्वम् उदानः पुण्येन पुण्यंलोकं नयति पापेन पापयुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम्।।** शांकरभाष्यार्थ में उक्त की व्याख्या इस प्रकार है- यह प्राण अपने भेद अपान को पायूपस्थ में - पायु (गुदा) और उपस्थ (मूत्रेन्द्रिय) में मूत्र और पुरीष (मल) आदि को निकालते हुए स्थित यानी नियुक्त करता है तथा मुख नासिका इन दोनों से निकलता हुआ सम्राट् स्थानीय प्राण चक्षुःश्रोत्रे - चक्षु और श्रोत्र में स्थित रहता है। प्राण और अपान के स्थानों के मध्य नाभिदेश में समान रहता है। ....इस हृदय देश में एक शत यानी एक ऊपर सौ (एक सौ एक) प्रधान नाड़ियाँ हैं। उनमें से प्रत्येक प्रधान नाड़ी के उन सौ-सौ भेदों में से प्रत्येक से बहत्तर बहत्तर सहस्र अर्थात् दो ऊपर सत्तर सहस्र प्रतिशाखा नाड़ियाँ हैं। .....इन सब नाड़ियों में व्यान वायु संचार करता है तथा उन एक सौ एक नाड़ियों में से जो सुषुम्णा नाम्नी एक उर्ध्वगामिनी नाड़ी है, उस एक के द्वारा ही ऊपर की ओर जाने वाला तथा चरण से मस्तक पर्यन्त सञ्चार करने वाला उदान वायु (जीवात्मा को) पुण्य कर्म यानी शास्त्रोक्त कर्म से देवादि-स्थान रूप पुण्यलोक को प्राप्त करा देता है......।''

महर्षि सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में प्राणमय कोश के सम्बन्ध में लिखते हैं, ''दूसरा 'प्राणमय' जिसमें 'प्राण' अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर आता, 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुँचाता, 'उदान' जिससे कण्ठस्थ अन्न-पान खैंचा जाता और बल पराक्रम होता, 'व्यान' जिससे सब शरीर में चेष्ठा आदि कर्म जीव करता है।'' महात्मा नारायण स्वामी जी अनुसार अपान नामक प्राण मल और मूत्रेन्द्रिय विभाग में रहकर अपना काम करता है। मुख, नासिका, आँख और कान के क्षेत्र में प्राण स्वयं रहकर उनके कार्यों का साधन बनता है। शरीर के मध्य नाभि क्षेत्रादि में समान नामक प्राण रहता है और खाये हुए अन्न को पचाता है। हृदय की प्राण नाड़ियों में व्यान नामक प्राण परिभ्रमण करता है तथा हृदय की एक सौ एक नाड़ियों में से एक के द्वारा ऊपर जाने वाले प्राण का नाम उदान है, जो मृत्यु समय जीव को कर्मानुसार भिन्न-भिन्न स्थानों को पहुँचाया करता है।

स्वामी सत्यबोध सरस्वती जी के शब्दों में, ''मुख्य प्राण हृदय (यह हृदय रक्त प्रेषण करने वाले अवयव से भिन्न है) में स्थित होकर मुख नासिका पर्यन्त प्राणनाड़ियों में ऊर्ध्वगति करता है। 'अपान' पायु तथा उपस्थ इन्द्रियों में स्थित होकर नासिका, मुख, कण्ठ, हृदय, नाभि से लेकर पायु इन्द्रिय तक प्राण नाड़ियों में नीचे की ओर संचरण करता है।' नाभि जो प्राण और अपान का सन्धिस्थल है, में स्थित होकर भुक्त आहार के रस आदि धातुओं को शरीर के समस्त अवयवों में पहुँचाने का काम करता है। 'उदान' पादतल से लेकर शिर के शीर्ष पर्यन्त नाड़ियों में उर्ध्व गति का हेतु है। 'व्यान' समस्त शरीर में नाड़ियों में व्याप्त पवन को कहते हैं।'' उपरोक्त उद्धरणों से शरीर में प्राणों की स्थिति तथा कार्य स्पष्ट है। उदान प्राण के द्वारा, उदान वृत्ति होने पर आत्मा/परमात्मा का साक्षात्कार संभव है, अतः उदान प्राण के बारे में पृथक् से विचार किया जावेगा।

४. प्राण की उत्पत्ति -

स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीमिन्द्रियम्। मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः कर्मलोका लोकेषु च नाम च।।

- प्रश्न.६.४

परमेश्वर ने प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रियाँ, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्मलोक और नाम-इन सोलह कलाओं की रचना की।

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च।
खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीविश्वस्य धारिणी।।

- मुण्डक २.१३

द्वितीय मुण्डक प्रथम खण्ड में चेतन सत्ता रूप विराट पुरुष की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि प्राण, मन, सब इन्द्रियाँ, आकाश, वायु, ज्योति, जल, विश्व को धारण

करने वाली पृथिवी उसी से उत्पन्न होती है।

ऊर्ध्वं प्राणमुन्नयत्यपानं प्रपगस्यति।

मध्ये वामनासीनं विश्वे देवा उपासते।। कठो. २.२.३

जो प्राण को ऊपर की ओर ले जाता है और अपान को नीचे की ओर ढकेलता है, हृदय के मध्य में हरने वाले उस वामन-भजनीय की सब देव उपासना करते हैं।

यः प्राणे तिष्ठन्प्राणादन्तरो यं प्राणो न वेद यस्य प्राणः शरीरं।

यः प्राणमन्तरो यमयत्येष स आत्मान्तर्याम्यमृतः।

- वृहद्. ३.७.१६

जो प्राण में रहता हुआ भी प्राण से अलग है, जिसको प्राण नहीं जानता, परन्तु प्राण ही जिसका शरीर है, जो प्राण के भीतर रहता हुआ उसका नियमन कर रहा है, वही सर्वान्तर्यामी परमात्मा है।

इस प्रकार प्राण चेतन सत्ता नहीं है, अपितु भौतिक तत्त्व है जो परमात्मा से उत्पन्न होता है तथा परमात्मा ही जिसका नियमन करता है। परमात्मा प्राण में रहता हुआ भी प्राण से अलग है तथा प्राण उसको नहीं जानता है। प्राण पाँच प्रकार से विभाजित हो जिन क्रियाओं को करता है, उनका कराने वाला परमात्मा है। बाह्य प्राण जीवों को सूर्य रश्मियों के माध्यम से नेत्रों द्वारा प्राप्त होता है तथा सर्वत्र व्याप्त है। इसको विद्वान् आधिदैविक प्राण के नाम से कहते हैं। दूसरा- जीवों के शरीर में स्थित परमात्मा वैश्वानराग्नि रूप से अन्नपानादि आहार को पचाता है, जैसा कि वृहदारण्यक उपनिषद् ५.११ में कहा गया है-

अयमग्निर्वैश्वानरो योऽयमन्तः पुरुषेयेनेदमन्नं पच्यते सदिदमद्यते।।

परम पिता परमात्मा ही अन्न, जल और घृतादि तैजस् आहार के अणुतम भाग से मन, प्राण और वाग् बलों को उत्पन्न करता है।

अन्नमयं हि सोम्य मन आपोमयः प्राणस्तेजोमयी वागिति।

- छान्दोग्य.६.५.४

अन्न से मन की शक्ति के अतिरिक्त स्थूल बल की भी प्राप्ति होती है जो प्राण बल का अधिष्ठान है-

प्राणः स्थूणाऽन्नं दाम। वृहद.२.२.१

इस प्राण को आध्यात्मिक प्राण भी कहा जाता है, यह प्राण ऊपर उठकर हृदय में आधिदैविक प्राण से मिल जाता है-

अपां सौम्य पीयमानानां योऽणिमा स ऊर्ध्वः

समुदिशति स प्राणो भवति।

इस प्रकार प्राण परमात्मा से ही उत्पन्न होता है तथा परमात्मा से ही इसका नियमन होता है।

- ५३/२०३, वी.टी.रोड, मानसरोवर, जयपुर, राज.

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

सरमा पणि संवाद – एक विवेचन

– उदयन आर्य

विश्व के पुस्तकालय में उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। प्राचीन भारतीय ऋषियों का मन्तव्य है कि सृष्टि के आदि में परमपिता परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से यह ज्ञान मनुष्यों को प्रदान किया। ये वेद परम पिता के निःश्वास के समान हैं। इन ऋचाओं का मुख्य विषय स्तुति है और इस स्तुति के माध्यम से ऋषि परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करते हैं। मंगलेच्छुक मनुष्य परम पवित्र इन ऋचाओं का अध्ययन करता है और स्वयं परमात्मा से ऋचाओं में स्थापित रस का आनन्द लेता है।[१]

कालान्तर में जब वेदों का साक्षात् दर्शन कठिन हो गया तो अन्य ग्रन्थ लिखे गये[२]। ब्रह्मा का (वेद) व्याख्यान ही ब्राह्मण कहलाता है। इन ब्राह्मणों में वेदों के भावों को योगों में विनियोग के साथ-साथ मन्त्रों की व्याख्या को रोचक बनाने के लिए नाटक का रूप दिया गया और इन नाटकों को जन तक पहुँचाने के लिए आख्यान के रूप में व्याख्यायें की गईं।

सरमा तथा पणि संवाद– सरमा शब्द निर्वचन प्रसंग में उद्धृत ऋग्वेद १०/१०८/०१ के व्याख्यान में प्राप्त होता है। आचार्य यास्क का कथन है कि इन्द्र द्वारा प्रहित देवशुनी सरमा ने पणियों से संवाद किया।[३] पणियों ने देवों की गाय चुरा ली थी। इन्द्र ने सरमा को गवान्वेषण के लिए भेजा था। यह एक प्रसिद्ध आख्यान है।

आचार्य यास्क द्वारा सरमा माध्यमिक देवताओं में पठित है। वे उसे शीघ्रगामिनी होने से सरमा मानते हैं। वस्तुतः मैत्रायणी संहिता के अनुसार भी सरमा वाक् ही है।[४] गाय रश्मियाँ हैं।[५] इस प्रकार यह आख्यान सूर्य रश्मियों के अन्वेषण का आलंकारिक वर्णन है। निरुक्त शास्त्र के अनुसार ''**ऋषेः दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसंयुक्ता**''[६] अर्थात् सब जगत् के प्रेरक परमात्मा अद्रष्ट अर्थों को आख्यान के माध्यम से उपदिष्ट करते हैं। वेदार्थ परम्परा के अनुसार मन्त्रों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं- आधिभौतिक, आदिदैविक, आध्यात्मिक। तीनों दृष्टियों से इस सूक्त के पर्यालोचन से सिद्ध होता है कि यह सूक्त किन्हीं विशेष अर्थों को कहता है। विश्लेषण के लिए इस सम्वाद में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को व्याकरण और निरुक्त के अनुसार समझने की आवश्यकता है।

क्रमशः एक-एक शब्द पर विचार करते हैं।

१. पणयः- ऋग्वेद में १६ बार प्रयुक्त बहुवचनान्त पणयः शब्द तथा चार बार एकवचनान्त पणि शब्द का प्रयोग है। पणि शब्द पण् व्यवहारे स्तुतौ च धातु से अच् प्रत्यय करके पुनः मतुबर्थ में अत इनिठनौ से इति प्रत्यय करके सिद्ध होता है। यः पणते व्यवहरति स्तौति स पणिः अथवा कर्मवाच्य में पण्यते व्यवहियते सा पणिः''। अर्थात् जिसके साथ हमारा व्यवहार होता है और जिसके बिना हमारा जीवन व्यवहार नहीं चल सकता है, उसे पणि कहते हैं । इस प्रकार यह पणि शब्द मेघ का वाचक है अथवा वायु का वाचक है। इस पणि को वृत्र अथवा 'असुर' कहा गया है। आचार्य यास्क के वृत्रं वृणोतेः कहकर जो आवरण करता है, ढक लेता है, उसे वृत्र कहते हैं। वही वृत्र वरण कर लेने वाला मेघ जब वारिदान करता है, तब देव कहलाता है, किन्तु जब जल को सुरक्षित कर लेता है बरसने नहीं देता, तब वह असुर कहलाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं- **राति ददाति इति रः सु शोभनं रति ददाति इति सुरः नु सुरः असुरः** अर्थात् इस यौगिक अर्थ के अनुसार असुर शब्द पणि के प्रसंग में अवरोधक मेघ है। (२) इन्द्र, निरुक्तकार यास्क के अनुसार इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति इति इन्द्रः इराम् जलानां आनेता इन्द्रः= सूर्य। इसी तरह आदि दैविक अर्थ में इन्द्र सूर्य का वाचक है, आध्यात्मिक अर्थ में इन्द्र जीवात्मा और परमात्मा को कहते हैं। इन्द्र सूर्य की गावः = रश्मयः गावः इति रश्मि नामसु पठितम् (निरुक्त)। अब इस कथा का भाव हुआ कि इन्द्र= सूर्य की गावः, रश्मियों को जल न देने वाले असुरों= मेघों ने आच्छन्न कर लिया है। इन्द्र के बार-बार

सूचना देने पर भी पणियों ने इन्द्र की गायों को नहीं छोड़ा और जिससे प्रजा व्याकुल होने लगी, जब इन्द्र ने दूती भेजी। दूती को यहाँ पर देवशुनी सरमा कहा गया है। **सरति गच्छति सर्वत्र इति सरमा, देवानां सुनी सूचिका दूती वा देवसूनी सरमा** कही गई है। इस प्रकार देवशुनी बादल की गड़गड़ाहट रूपी ध्वनि के साथ पणियों से संवाद करती है और कहती है कि हमारे राजा की गौओं को छोड़ दो, नहीं तो हमारा बलवान राजा दण्ड देगा। पणियों ने देवशुनी की बात नहीं मानी, तब इन्द्र ने वज्र प्रहार कर अर्थात् वायु के प्रहार के माध्यम से पणियों को मारकर धरती पर सुला दिया और अपनी गायों को मुक्त करा लिया। सारा संसार वृष्टि से सुखी हुआ और सूर्य की किरणें चारों ओर फैल गईं। वैदिक आख्यानों को सामान्य अर्थों में ग्रहण न करके विशिष्ट एवं यौगिक अर्थों में ही ग्रहण करना चाहिए। शब्दों के यौगिक अर्थों के आलोक में इन आख्यानों को देखने पर वेदार्थ की उत्तम, आदर्श, नव्य और दिव्य प्रक्रिया का ज्ञान होता है।

अन्त में प्रश्न आता है कि वैदिक आख्यानों की वास्तविकता स्वीकरणीय है अथवा अस्वीकरणीय? तो इसका संक्षेप में उत्तर यह है कि यदि रूपकालंकार की दृष्टि से वे आख्यान मन्त्रार्थ से संगत होते हैं तो वे आलंकारिक रूप से अथवा शाश्वत घटित होने वाली घटनाओं के ऐतिहासिक शैली के चित्रण के रूप में ग्राह्य एवं स्वीकरणीय हैं, परन्तु यदि मन्त्र सूक्त गत संवादादि का सम्बन्ध किसी अवरकालिक पुराण महाभारतादि ग्रन्थों में वर्णित अनित्य इतिहास से बलात् जोड़ा गया है और वह गठजोड़ असंगत और अटपटा लग रहा है तो उसे वास्तविक रूप में स्वीकार न करके सर्वथा अवास्तविक ही मानना चाहिए। **तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च**[7] तथा **नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्**[8] के धातुज वैयाकरणों में विशेष: शाकटायनाचार्य तथा सम्पूर्ण नैरुक्त समुदाय वेद के शब्दों को धातुज अर्थात् यौगिक मानते हैं। इस दृष्टि से वेद मन्त्रों से कोई रुढ़ि अर्थ या मानवीय अनित्य इतिहास के वर्णन की सम्भावना वहाँ नहीं हो सकती है, अत: सारमेयाश्वानी, यम-यमी, अश्विनी, देवापि, सरमा, पणि, विश्वामित्र, गृत्समद इन्द्र आदि पदों से किसी लौकिक कथानक की कल्पना वेदों में करना अन्धाधुन्ध है। ऐसे शब्दों और उनसे अभिव्यक्त होने वाले कथोपकथन से किसी अन्य प्राकृतिक व वैज्ञानिक तथ्य का अनुसन्धान करना ही युक्ति संगत होगा। यदि कोई आख्यान मन्त्रार्थ को स्पष्ट करने के लिए कल्पित किये गये हैं तो उनको आलंकारिक दृष्टि से संगत मानना चाहिए। मन्त्रों में उपमा, रूपक, श्लेषादि अलंकारों का प्रयोग प्राचीन और अर्वाचीन प्राय: सभी भाष्यकारों ने स्वीकार किया। वैदिक आख्यानों में प्राकृतिकता, अलोकिकता आदि का वर्णन मिलता है। उर्वशी आख्यान में मेघों का और विद्युत और मेघ के युद्ध का वर्णन है। वैदिक ग्रन्थों ने इनका प्राकृतिक अर्थ किया है।

उपरिगत विवेचन से यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि मन्त्रगत इतिहास अथवा आख्यान तत्त्वत: औपचारिक, अर्थवादात्मक, उपमार्थक अथवा आलंकारिक हैं, आधुनिक अर्थ में ऐतिहासिक नहीं, अत: उनके सम्यक् अवगम एवं विश्लेषण में अतीव सावधानी तथा चिन्तन की अपेक्षा है।

पाद टिप्पणी

१. य: पावमानीरध्येतृषिभि: सम्भतं रसम्-ऋग्वेद ९.६७.३१

२. साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवु: तेऽवरेभ्योऽसाक्षात् कृत धर्मभ्य उपदेशेन मंत्रान् सम्प्रादु:।

उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्म ग्रहणाय ग्रन्थं समाम्नासिषु वेदं च वेदांगानि च। निरुक्त। १.२१

३. निरुक्त ११.२५ देवशुनीन्द्रेण प्रहिता पणिभिरसुरै: समूढ इत्याख्यानम्।

४. वाग् वै सरमा।

५. निरक्त २.७ सर्वेऽपि रश्मयो गाव उच्यते।

६. निरुक्त १०.४६

७. निरुक्त १/१२

८. पातंजल महाभाष्य ३.३१

- **दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।**

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ मार्च २०१६ तक)

१. श्री किशोर काबरा, अजमेर २. श्री देवमुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. डॉ. आर.जे. सोनी, भीलवाड़ा, राज. ५. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली ६. श्रीमती सुचेता शर्मा व श्री जयन्त शर्मा, गुडगाँव, हरियाणा ७. श्री रमेश मुनि व श्रीमती उषा बंसल ८. श्री विकास दुबे, कोटा, राज. ९. श्री रामकिशन चौरसिया, विदिशा, म.प्र. १०. श्री सोमदेव आर्य, मुम्बई, महाराष्ट्र ११. राजपूताना म्यूजिक हाउस, अजमेर १२. श्रीमती कमला आर्य, जोधपुर, राज. १३. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर १४. श्री के.के. तनेजा, दिल्ली १५. श्री हंसराज, बीकानेर, राज. १६. प्रिया रत्न गुप्ता, बहादुरगढ़, हरियाणा १७. भूपसिंह, सिरसा, हरियाणा १८. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १९. श्री ईश्वरदयाल माथुर, जयपुर,राज. २०. श्री माँगीलाल गोयल, अजमेर २१. कर्नल अनिल सिंघल, नई दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ मार्च २०१६ तक)

१. आर्यसमाज, पंचकुला, हरियाणा २. श्री देवमुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ५. श्री कल्प उपाध्याय, अजमेर ६. श्री सन्तोष वायरमैन व श्री अनुरोध वायरमैन, अजमेर ७. श्री ईश्वरदास, अलीगढ़, उ.प्र. ८. श्री व्रजेन्द्र सिंह, फरीदाबाद ९. श्रीमती मन्जु शर्मा, अजमेर १०. श्री कृष्ण सिंह राठी, झज्जर, हरियाणा ११. श्रीमती कमला आर्या, जोधपुर, राज. १२. श्रीमती रमा देवी रावत, अहमदाबाद, गुजरात १३. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर १४. श्री सुदर्शन अग्रवाल, गुडगाँव १५. श्री मदल लाल गुडगाँव १६. श्री सतीश कुमार, गुडगाँव १७. श्री दक्ष आर्य, गुड़गाँव १८. श्री कृष्ण कुमार गुजर, जयपुर, राज. १९. श्रीमती सुषमा शर्मा, पानीपत, हरियाणा २०. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर २१. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर २२. श्रीमती राजकली, जीन्द, हरियाणा २३. श्री धर्मवीर शास्त्री, भिवानी, हरियाणा।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

ऋषि मेला २०१५ दानदाता सूची

३०१. श्री विद्यामित्र ठुकराल, नई दिल्ली ३०२. राधा प्रेस, दिल्ली ३०३. श्री रामलाल आर्य, जयपुर, राज. ३०४. स्वामी सत्यानन्द, हरियाणा ३०५. आर्य प्रकाशन, अजमेर ३०६. श्री दुलीचन्द, पलवल, हरियाणा ३०७. सुषमा कला केन्द्र, गाजियाबाद ३०८. मेघदूत ग्राम उद्योग, उदयपुर, राज. ३०९. श्री सोमवीर शास्त्री, दिल्ली ३१०. श्री शिवराज सिंह, अजमेर ३११. गुणमाला हर्बल, इन्दौर ३१२. टंकारा साहित्य सदन, हिण्डौनसिटी ३१३. गुरुकुल झज्जर, हरियाणा ३१४. आयुर्वेदिक रसायनशाला, झज्जर, हरियाणा ३१५. बाबा हर्बल, बडौदा, गुजरात ३१६. अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद ३१७. संस्कृत भारती, अजमेर ३१८. श्रीमती सीमा खन्ना, अजमेर ३१९. श्री चन्द्रपाल सिंह, अलीगढ़ ३२०. श्री कमल आर्य, जोधपुर ३२१. श्री गिरधारीलाल वर्मा, सीकर, राज. ३२२. श्री केशवदेव आनन्द, अजमेर ३२३. श्री मयंक कुमार, अजमेर ३२४. श्री नन्दकिशोर जेथलिया, अजमेर ३२५. श्रीमती अमृता मनोज काबरा, कुवैत ३२६. श्रीमती सूर्या कुमारी, अजमेर ३२७. श्री संजय गुप्ता/श्रीमती अंजु गुप्त, मनवार, म.प्र. ३२८. श्री किशन सिंह मेहर, अजमेर ३२९. श्री राधेश्याम महेश्वरी, अजमेर ३३०. श्री वमन दिगम्बर, बुलाना ३३१. श्री ओमप्रकाश सोमानी, अजमेर ३३२. श्रीमती शान्ति देवी आर्या, हिण्डौनसिटी ३३३. श्री किशनाराम, बीकानेर, राज. ३३४. श्री दयाव्रत शास्त्री, रोहतक, हरियाणा ३३५. श्री कंचन सिंह, अगरा, उ.प्र. ३३६. श्रीमती सुमित्रा आर्या, झज्जर, हरियाणा ३३७. श्री राजवती, दिल्ली ३३८. श्री जयदत्त, गुडगांव हरियाणा ३३९. श्री रोहिताश आर्य, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ३४०. श्री अचलचन्द रावल, पाली, राज. ३४१. प्रधान, आर्यसमाज, रायपुर, छत्तीसगढ़ ३४२. श्री मुकेश ज्यूस केन्द्र, विजयनगर, राज. ३४३. श्री राजेश आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा ३४४. श्री रामदेव आर्य, बहादुरगढ़, हरियाणा ३४५. श्री कैलाशचन्द आर्य, अजमेर ३४६. श्री रामकिशन छाता, भीलवाड़ा ३४७. श्री राजेश महेश्वरी ३४८. श्री जगदीश चन्द्र दाधीच, अजमेर ३४९. श्री यजुर्वेद आर्य, अजमेर ३५०. श्री प्रताप सिंह, अजमेर ३५१. श्री सुभाष आर्य, अजमेर ३५२. प्रधान आर्य समाज ब्यावर, राज. ३४३. आर्यसमाज, भीलवाड़ा, राज. ३४४. श्री शिवलाल मौर्य, किशनगढ़ राज. ३४५. श्री रामचन्द्र आर्य, अजमेर ३४६. श्री जगदीशप्रसाद वर्मा, अजमेर ३४७. श्री भारतभूषण शास्त्री, अजमेर ३४८. श्री सत्यनारायण काबरा/श्रीमती प्रेम काबरा, अजमेर ३४९ श्री नरोत्तम, नारनौल, हरियाणा ३५०. श्री संजय माथुर, अजमेर ३५१. आर्यसमाज शिवगंज, सिरोही, राज. ३५२. श्रीमती सुषमा भितलानी, नई दिल्ली ३५३. श्री अम्बालाल शर्मा, निम्बाहेड़ा ३५४. श्री ताराचन्द शास्त्री, रेवाड़ी, हरियाणा ३५५. आर्य रामचन्द्र पहलवान, सिकन्दराबाद, तेलंगाना ३५६. श्री रामचन्द्र सिंह, लाड़नु ३५७. श्री दीपेश, अजमेर ३५८. श्रीमती सम्पतबाई आर्या, मन्दसौर ३५९. श्री अजयकुमार ३६०. श्री मोहनदास ३६१. श्री राधेश्याम, भींड ३६२. श्रीमती करुणा ३६३. श्री बी. सत्यनारायण आर्य ३६४. श्री चाँदमल साहू, छोटी सादड़ी ३६५. श्री देवव्रत आर्य, संगम, बिहार ३६६. श्री राजेन्द्र सिंह राणा, नई दिल्ली ३६७. श्री के.पी. सिंह, नई दिल्ली ३६८. श्री बेहराम आर्य, शिवगंज ३६९. श्रीमती रुक्मणी देवी, जयपुर, राज. ३७०. श्री हरिसिंह बासनवाल, अजमेर ३७१. श्री राहुल कुमार/योगेन्द्र सिंह, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ३७२. श्री बालकिशन लड्ढा, पिचोलिया ३७३. श्री रामनारायण आर्य, पानीपत ३७४. श्री सुरेन्द्र आर्य, भिवानी, हरियाणा ३७५. श्री विनोद सैनी/श्री सुरेन्द्र सांगवान, भिवानी, हरियाणा ३७६. वेद प्रचारणी सभा, चमघेड़ा ३७७. श्री सत्यव्रत आर्य, चमघेड़ा ३७८. श्री सालिगराम चौधरी, होशंगाबाद ३७९. श्री भूपसिंह सैनी, नई दिल्ली ३८०. श्री जयपाल गर्ग, नई दिल्ली ३८१. श्री ओमप्रकाश गोयल, नई दिल्ली ३८२. श्री व्रतपाल आर्य, हैदराबाद, तेलंगाना ३८३. मा. सीरा सिंह आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा ३८४. श्री जयपाल सिंह, रेवाड़ी, हरियाणा ३८५. डॉ. फेहरीसिंह आर्य, बुलंदशहर ३८६. श्री रामेश्वरप्रसाद आर्य, जयपुर, राज. ३८७. वार्ड सूर्यकांत, हैदराबाद ३८८. आर्यसमाज, निजामाबाद, तेलंगना ३८९. आर्यसमाज, जोधपुर, राज. ३९०. श्री चम्पालाल आर्य, जोधपुर, राज. ३९१. श्री सावंतराज, सोजतसिटी, राज. ३९२. डॉ. जगदेव, रोहतक, हरियाणा ३९३. श्री नरपतसिंह आर्य, जालौर, राज. ३९४. श्रीमती प्रतिक्षा विजयवर्गीय, बारान, राज. ३९५. श्री जुगलराज, जोधपुर, राज. ३९६. श्री पृथ्वीसिंह शास्त्री, सोनीपत, हरियाणा ३९७. श्री महेन्द्र सिंह आर्य, नई दिल्ली ३९८. मंत्री जी, आर्य समाज नागौर, राज. ३९९. श्री जयपाल सिंह आर्य/श्री जमादारसिंह, आगरा, उ.प्र. ४००. श्री विवेक स्वाच, नई दिल्ली।

ईश्वर अवतार नहीं लेता

– डॉ. ब्रजेन्द्रपाल सिंह

ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अनादि व अनन्त अजन्मा आदि गुणों वाला है, ऐसा वेद में वर्णन है, परन्तु पौराणिक भाई मानते हैं कि ईश्वर जन्म लेता है, जिसे अवतारवाद कहते हैं। राम को ईश्वर का अवतार मानते हैं, कृष्ण को भी ईश्वर का अवतार मानते हैं। यह भी मानते हैं कि किसी भी रूप में ईश्वर धरती पर जन्म लेकर आता जाता है।

अवतारवाद पूर्णत: वेद विरुद्ध है। वेद में ईश्वर के जन्म लेने व अवतार का कहीं वर्णन नहीं, अपितु वह अजन्मा है, जन्म नहीं लेता, अनादि है। उसका न आदि है, न अन्त है। वह एक स्थान पर नहीं रहता, सर्वव्यापक है, कण-कण में समाया है। हमारे अन्दर बाहर है, आकाश- जल- थल- पृथ्वी- चन्द्रमा- सूर्य और उससे आगे तक भी है, जहाँ हमारा मन नहीं पहुँचता, वहाँ भी है। पहले से है, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी रहता है, प्रलय के बाद भी रहता है, सर्वशक्तिमान् है, अपनी शक्ति से ग्रह, तारों को घुमा रहा है। यह सब जगत् उसी का है, उसने ही तो बनाया है, नियम से चला रहा है-

ईशावास्यमिदं सर्वयत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा ग्रध: कस्यस्विद्धनम्।।

– ईशोपनिषद्

अर्थात् इस संसार में जो भी यह जगत् है, सब ईश्वर से आच्छादित है, अर्थात् ईश्वर सृष्टि के कण-कण में बसा है, सर्वव्यापक है। यह सब धनादि जिसका हम उपयोग कर रहे हैं, सब उसका ही है। हम यह सोच कर प्रयोग करें कि यह हमारा नहीं है। जो कुछ हमें उस प्रभु ने दिया है, उस सबका त्याग के भाव से प्रयोग करें।

सृष्टि में जो कुछ भी है, उसी का है। ग्रह, उपग्रह, पृथ्वी व चन्द्रमा आदि निश्चित वेग से घूम रहे हैं, एक नियम से चक्कर काट रहे हैं, गति कर रहे हैं। समय पर ऋतुएँ आती है, जाती हैं। वह जगत् को नियम में चला रहा है।

वह बिना जन्म लिए ही सब काम कर रहा है। उसे जन्म लेने की क्या आवश्यकता है? कहते हैं, रावण को मारने के लिए राम के रूप में ईश्वर ने अवतार लिया या जन्म लिया- ये सब बातें काल्पनिक हैं, मन गढ़न्त हैं। पूरी सृष्टि को चलाने वाला बिना जन्म लिये ही सब कार्य कर रहा है, सब पर उसकी दृष्टि है, सब देख रहा है। ब्रह्माण्ड में ग्रह तारे सब गति कर रहे हैं, कभी किसी से टकराते नहीं, जैसे कि चौराहे पर ट्रैफिक कण्ट्रोलर यातायात को कण्ट्रोल करता रहता है। यदि यातायात को नियन्त्रण न किया जाय तो यातायात अवरुद्ध हो जाएगा, गाड़ियाँ आपस में टकराएँगी, परन्तु यातायात नियंत्रक के कारण सब ओर की गाड़ियाँ बिना अवरोध के ही आती-जाती रहती हैं। यही प्रक्रिया सृष्टि को चलाने वाले उस परमात्मा की है, वह सबको देखने वाला है, कर्मों के अनुसार फल देने वाला है, जो हम सोचते हैं वह सब जानता है, परन्तु वह भोक्ता नहीं, वह सत्य चेतन आनन्द स्वरूप है। यहाँ जन्म तो वही लेगा, जिसे कर्मों का फल भोगना है। जीव बार-बार जन्म लेता है, मोह माया में बँधा हुआ है। ईश्वर मोह माया में बँधा नहीं, वह तो जगत् नियन्ता है, जगत् को चला रहा है, सबको देख रहा है, अनादि है, अनन्त है। तीन तत्त्व अनादि अनन्त है- परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति -

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्यो अभिचाक शीति:।

– ऋग्वेद १/१६४/२०

यहाँ यही बताया है कि एक वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हैं, उनमें एक उस वृक्ष के खट्टे-मीठे फलों का स्वाद चख रहा है, दूसरा उस पक्षी को देख रहा है, स्वाद नहीं चख रहा। आलंकारिक भाषा में यहाँ त्रिविध अनादि तत्त्व ईश्वर, जीव व प्रकृति का वर्णन है। वृक्ष प्रकृति के रूप में दर्शाया है, देखने वाले पक्षी का संकेत ईश्वर के लिए तथा फल खाने वाला पक्षी का जीव की ओर संकेत है। ईश्वर इस प्रकृति में जीव के कर्मों को देख रहा है। वह कर्मों का

भोक्ता नहीं है। जब भोक्ता नहीं तो जन्म किसलिए? वह तो सर्वव्यापक विभु है, सर्व शक्तिमान् है, अपनी शक्ति से सृष्टि को चला रहा है। रावण हो या दुर्योधन, सबने अपने कर्मों को भोगा। ईश्वर के अवतार से राम का कोई सम्बन्ध नहीं। वे कौशल्या के गर्भ से पैदा हुए, संसार में आए और उन्होंने अपने कर्म किए। उनका कर्म उनके साथ था। वे दशरथ के पुत्र थे। ईश्वर किसी का पुत्र नहीं, अपितु सबका पिता है। कर्मफल भोक्ता तो गर्भ में भी रहेगा, जन्म भी लेगा, दु:ख भी सहेगा, क्लेश भी सहेगा, माया-मोह के बन्धन में भी रहेगा, मृत्यु भी होगी। यह गुण कर्मफल भोक्ता जीव के तो हैं, ईश्वर के नहीं, अत: राम को ईश्वर बताना न तर्कसंगत है, न युक्ति युक्त। राम दशरथ नन्दन थे, राजा मर्यादा पुरुषोत्तम थे। वेदानुसार चलने वाले थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा प्रदान करता है।

एक ओर हम महापुरुषों को अवतार बताते हैं, दूसरी ओर उनके चरित्र पर लांछन लगाते हैं। जिन राम का हम सुबह-शाम, उठते-बैठते जागते-सोते समय नाम लेते हैं, उनके आचरणों का पालन नहीं करते, उनके जीवन से शिक्षा नहीं लेते। मुँह में पान, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का लगा रहता है और राम का नाम लेते हैं। उससे क्या लाभ? राम तो धूम्रपान नहीं करते थे, मद्य नहीं पीते थे, हुक्का, तम्बाकू नहीं लेते थे, फिर हम क्यों करते हैं? हमें इन मादक द्रव्यों को त्याग कर जैसा आचरण राम का भाइयों के साथ माताओं के साथ प्रजा के साथ था, वैसा करना चाहिए। राम मनुष्य थे, राजा थे, कर्त्तव्य परायण थे, माता पिता के आज्ञाकारी थे, धर्म व मर्यादा पालक थे, निराभिमानी थे, प्रजा वत्सल थे, जन-जन के प्यारे थे, वह ईश्वर नहीं थे, अवतार नहीं थे।

हमें सत्यासत्य का विवेकपूर्ण निर्णय लेना चाहिए और अपने सत्याचारी वेदानुयायी महापुरुषों को जैसे थे वैसा ही मानकर उनके सद्‌गुणों को जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए।

- चन्द्रलोक कॉलोनी खुर्जा (बुलन्दशहर)
मो. ८९७९७९४७१५

वीरो! अपना देश बचाओ

-पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक पत्रकार

आर्यवर्त्त के वीर सपूतो, मिलजुल करके कदम बढ़ाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

ऋषियों-मुनियों के भारत में, पापाचार गया बढ़ भारी।
डाकू , गुण्डे, चोर सुखी हैं, मस्ती में हैं मांसाहारी।।
शासक दल बन गया शराबी, आज दु:खी हैं वेदाचारी।
रक्षक हैं भारत में भक्षक, जागो! भारत के बलधारी।।
मानवता का पाठ पढ़ाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

काट-काट बिरवे गुलाब के, यहाँ नागफन सींचा जाता।
डाल-डाल पर बैठे उल्लू, देख-देख माली हर्षाता।।
खाओ-पीओ, मौज उड़ाओ, युवा वर्ग है निश-दिन गाता।
अपमानित हैं यहाँ देवियाँ, सिसक रही है भारत माता।।
राम, भरत के वीर सपूतो! दु:खी जनों के कष्ट मिटाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

उग्रवाद, आतंकवाद ने, देश हमारा घेर लिया है।
नेता हैं कुर्सी के भूखे, पाप जिन्होंने बढ़ा दिया है।।
देश-धर्म का ध्यान नहीं है, जिनका पत्थर बना हिया है।
वैदिक पथ तज दिया खलों ने, भारत को बर्बाद किया है।।
स्वामी दयानन्द बन जाओ, जग में नाम अमर कर जाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

गो ब्राह्मण की सेवा करना, ऋषियों ने है धर्म बताया।
गो माता है खान गुणों की, वेद शास्त्रों में दर्शाया।।
लेकिन उनकी शिक्षाओं को, दम्भी लोगों ने बिसराया।
नकल विदेशों की कर-करके, अपना जीवन नरक बनाया।।
गो हत्या को बन्द कराओ, वीरो! कृष्ण स्वयं बन जाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

याद रखो! जो देश-धर्म की, श्रद्धा से करते हैं सेवा।
वही भाग्यशाली पाते हैं, कीर्ति सुयश की पावन मेवा।।
डूब रही है नाव धर्म की, पार लगाओ बनकर खेवा।
अगर न जागे नहीं मिलेगा, नाम तुम्हारा जग में लेवा।।
''नन्दलाल'' है भला इसी में, जितना हो शुभ कर्म कमाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

- ग्राम व पो. बहीन जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष - ९८१३८४५७७४

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

हैदराबाद पुस्तक मेले में इस्लामिक बुकस्थल पर धर्म चर्चा

मैं (रणवीर) और राहुल जी (अकोला) पुस्तक मेले में संदर्शनार्थ गये थे। हम प्रवेश पत्र लेकर जैसे ही अन्दर गये, वहाँ पर एक अच्छा-सा मंच लगाया हुआ था, उस मंच पर प्रतिदिन नये-नये पुस्तकों का उद्घाटन होता रहता था और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते रहते थे। उस मंच के चारों तरफ भव्य सुन्दर पुस्तक बिक्री की दुकानें लगी हुई थीं। हम एक-एक बिक्री विभाग देखते हुए आगे बढ़ रहे थे। एक पुस्तक बिक्री विभाग पर हमारे सहिष्णु मित्रों द्वारा खुल्लम-खुल्ला धर्म प्रचार हो रहा था, उस बिक्री विभाग में भेड़ जैसे मूर्ख, बुद्धू हिन्दुओं को भेड़ की खाल में भेड़िये दीन की ओर आकर्षित कर रहे थे। वहाँ पर जाकर हमने भी धर्म चर्चा में भाग लिया। एक मौलवी एक धर्म निरपेक्ष (सेक्यूलर) हिन्दू बाप-बेटी को कुरान हाथ में थमा कर कुरान में विज्ञान है, कुरान में विज्ञान है, कुरान में भाईचारा है, कुरान में सृष्टि विद्या है, कुरान ईश्वरीय ज्ञान है..... ऐसी-ऐसी बातें बता रहे थे। तो हमने झट से प्रश्न किया- आपके कहे अनुसार कुरान मनुष्य मात्र के लिए है, भाईचारा है, तो कुरान में काफिरों के लिए भाईचारा क्यों नहीं? उन्होंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, फिर हमने दूसरा प्रश्न किया- हजरत मोहम्मद कहाँ तक पढ़े-लिखे थे? तो उन्होंने कहा- कुछ भी पढ़े-लिखे नहीं थे, हमने कहाँ- जो स्वयं पढ़े-लिखे नहीं, वो दुनिया को क्या पढ़ा सकता है? बीच में बुजुर्ग हिन्दू कूद पड़े और कहने लगे- यह सम्भव है कि एक अनपढ़ भी पढ़ा सकता है। तो हमने कहा- आप तो पढ़े-लिखे लग रहे हैं श्रीमान् जी! क्या आपने अपनी पुत्री को किसी बिना पढ़े के पास पढ़ने के लिए भेजा था क्या? तो वे निरुत्तर हो गये। हमने उदाहरण के रूप में समझाया- वनवासी जो नग्न होके घूमते रहते हैं, बिना पढ़ाये हुए, वो शिक्षित हो रहे हैं क्या? आप तो पैगम्बर बनने की बात कर रहे हैं। फिर हमने तीसरा प्रश्न किया कि आप तो पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को मानते ही नहीं। तो मौलवी ने प्रश्न किया- आप यह मानते हैं कि जो इस जन्म में अच्छे कर्म करते हैं, उनको परमात्मा अगला जन्म प्रमोशन के तौर पर और अच्छा जन्म देता है? तो हमने कहा- हाँ स्वाभाविक है। फिर मौलवी ने प्रश्न किया- उनका अगला जन्म झोपड़पट्टी में क्यों होता है? तो हमने जवाब दिया- उनके कर्मों के अनुसार। मौलवी ने प्रश्न किया- पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को सिद्ध करो। तो हमने कहा- आप हमारे सामने सात-आठ मौलवी खड़े हैं, आप सारे के सारे एक जैसे क्यों नहीं है? कोई काला, कोई मोटा, कोई पतला, कोई टेढ़ा.....? इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि हर एक का शरीर एक जैसा नहीं है और मन, बुद्धि, इन्द्रियों की शक्ति सामर्थ्य भी अलग-अलग है। तो इससे यदि आपको मालूम पड़ता है कि यह भेदभाव अल्लाताला ने जानबूझ कर अपनी मर्जी से किया है, तो अल्लाताला अन्यायकारी सिद्ध होगा, लेकिन यह पूर्वजन्म के अपने-अपने कर्मानुसार हमें मिले हैं। एक मौलवी ने प्रश्न किया- जो पिछले जन्म में अच्छे कर्म किये हैं, उनको ज्वर आदि की पीड़ा बिल्कुल भी नहीं होनी चाहिए। तो हमने उत्तर दिया- जनाब, ज्वर की बात छोड़िये, यदि जीवात्मा ने पिछले जन्म में कुछ बुरे कर्म किये होंगे तो परमात्मा उनके शुभ कर्मानुसार उनको अच्छा शरीर देकर फिर उनके बुरे कर्म फलस्वरूप उनके शरीर के अंगों को छीन लेते हैं, जैसे दुर्घटना में हाथ या पाँव कट जाना आदि। और एक उदाहरण- बच्चे बहुत मासूम होते हैं, वे तो मन से भी पाप नहीं करते हैं, तो उनका भी अपने पिछले जन्मों के कर्मानुसार किसी दुर्घटना में हाथ या पाँव आदि टूटना आदि होता रहता है, और तो और मासूम बच्चों की बात छोड़िये, जब एक माँ गर्भवती होती है तो आप उस गर्भवती माँ से पूछिये कि क्या अपने पेट के अन्दर अपने बच्चे का हाथ, पाँव, मुख, हृदय आदि इन्द्रियाँ वह स्वयं तैयार कर रही हैं क्या? तो आप जवाब पाओगे कि नहीं, दुनिया कि कोई भी माँ अपने पेट के अन्दर के बच्चे के शरीर का निर्माण स्वयं नहीं कर सकती, वह परमात्मा का कार्य है। यदि उस माँ को वह कार्य सौंप दिया होता तो कोई भी अपंग बच्चा पैदा नहीं होता। इससे साबित हो रहा है कि उन बच्चों ने माँ के गर्भ में कोई कर्म ही नहीं किये, फिर भी उनके पिछले जन्मों के अशुभ कर्मों के दण्ड के तौर

पर वे बच्चे अपंग पैदा हो रहे हैं और माँ के गर्भ में बच्चे के दिल के अन्दर छेद कौन कर रहा है? स्वयं माँ तो नहीं कर सकती है न? उस बच्चे ने अभी जन्म भी नहीं लिया, कोई कर्म भी नहीं किया, नौ महीने भी पूरे नहीं हुए, फिर भी उसके दिल में छेद क्यों हो गया है? ये उनका पूर्व जन्मों का अशुभ कर्मों का फल है, वह परमात्मा दे रहा है, वह न्यायकारी है। इस विषय पर वे चुप हो गये। दूसरे मौलवी ने हम दोनों से कहाँ- भैया, आप यहाँ से चले जाइए। वे सोच रहे थे कि भीड़ ज्यादा इकट्ठा हो रही है, बात नहीं जम रही है। तो और एक मौलवी ने हम से प्रश्न किया- आप मूर्ति में भगवान को मानते हैं क्या? आप अवतार आदि को भी मानते हैं और आप वराह अवतार को भी मानते हैं कि नहीं? तो हम ने कहाँ मूर्ति जड़ है, प्रकृति है, परमात्मा नहीं, हम अवतार आदि को भी नहीं मानते, परमात्मा जीवात्मा नहीं हो सकता, जीवात्मा परमात्मा नहीं हो सकता, तो वे चुप हो गये। हमने मौलवियों से प्रश्न किया- कुरान में भाईचारा है, शान्ति का सन्देश है, तो क्यों अल्लाताला ने गाय को काट के खाने को कहा है, सूअर को नहीं? तो उन्होंने हमसे कहा- आपके सामने एक तरफ अमृत है, एक तरफ जहर है, तो आप किसे स्वीकार करेंगे? हमने कहा- अमृत को, तो उन्होंने कहा- सूअर जहर है, इसीलिए कुरान में उसको खाने के लिए मना किया गया है और सूअर किसी दूसरे काम के लिए बनाया गया है, तो हमने कहा- गाय के गोबर से खेत पुष्ट होते हैं, उस अन्न को खाने से हम मनुष्य पुष्ट होते हैं, गौ मूत्र से कैंसर आदि रोग ठीक हो रहे हैं, दवाइयों में उपयोग होता है, दूध से घी बनता है, उसे खाने से बुद्धि पवित्र होती है, यदि अल्लाताला न्यायकारी है, गाय और सूअर दोनों को खाने के लिए कहता या दोनों को नहीं खाने के लिए कहता। एक के साथ न्याय, एक के साथ अन्याय? इससे सिद्ध हो रहा है कि यह कुरान अल्लाताला का नहीं, किसी अल्पज्ञ के द्वारा लिखी हुई पुस्तक है। सूअर को किसने बनाया? अल्लाताला ने या किसी और ने? पूछने से वे निरुत्तर हो गये। हमने मौलवियों से प्रश्न किया- आपका अल्लाताला सातवें आसमान पर कहाँ है? आसमान कितने होते हैं? अल्लाताला का सिंहासन कहाँ है? उनके आठ चेले बकरे के जैसे मुँह वाले सिंहासन को उठाने वाले कहाँ हैं? तो हमारे प्रश्नों की झड़ी सुनकर वे कहने लगे- भैया, आप दोनों यहाँ से चले जाइये। तो हमने कहा- आपके अल्लाताला का सिंहासन यहाँ लाओ, हम बैठना चाहते हैं। दो-तीन मौलवी हमारे पास आकर हमारी कमर पकड़ कर बोले- भैया, कृपया आप यहाँ से चले जाइये। एक ओर मौलवी ने कहा- तुम्हारे वेदों में पैगम्बर मोहम्मद का नाम सामवेद के अध्याय के एक श्लोक में आता है। हम पूज्य जिज्ञासु जी द्वारा लिखित 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' पढ़ चुके थे, झट से बोले- कुरान में हर सूरत से पहले ऋषि दयानन्द जी का नाम आता है, तो वे मौलवी आग-बबूला होते हुए कुरान हमारे हाथ में थमा कर 'दिखाओ' कहने लगे, तो हमने कहाँ- अभी दिखाते हैं, यह कहकर हमने रहमान-उल-रहीम का तो सीधा-सा अर्थ दयालु दयानन्द या दयावान दयानन्द है, यह कहा। हमसे यह उत्तर सुनकर उनके पैरों तले धरती खिसक गई। फिर हमने कहा- चारों वेदों में मन्त्र होते हैं, श्लोक नहीं, सामवेद में अध्याय नहीं होते हैं, पूर्वार्चिक उत्तरार्चिक होते हैं। फिर हमने एक ओर प्रश्न किया- कुरान में लिखा हुआ है कि चाँद के दो टुकड़े हुए हैं, तो मौलवी ने कहा- जाओ जाके देखो, दिखेगा....। वहाँ जितने भी लोग खड़े थे, वे हँसने लगे और हम भी खूब हँसे एवं हँसते हुए बोले- आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सत्यार्थ प्रकाश पढ़िये, हम आर्यसमाजी हैं और कुल्लियाते आर्य मुसाफिर पढ़िये, अमर शहीद पं. लेखराम जी की है। उसमें तो पं. लेखराम जी ने कुरान की धज्जियाँ उड़ा रखी हैं। कहते हुए हम खूब हँसते रहे। दो-तीन मौलवी हमारे कमर पर हाथ रखकर- जाओ भाई, यहाँ से जाओ, कहने लगे तो हमने उनसे यह अन्तिम वाक्य कहते हुए विदा ली- आपसे धर्मचर्चा करके हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है, इस तरह की धर्मचर्चा हर गली में, हर मौहल्ले में, हर मस्जिद में होनी चाहिए। ये शब्द कहते हुए, न चाहते हुए भी वहाँ से हमें घर लौटना पड़ा। अस्तु। धन्यवाद।

– रणवीर

जिज्ञासा समाधान – १०८

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा– आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते।

ओ३म् जय जगदीश हरे... यह भजन पौराणिक जगत् में आरती के नाम से प्रचलित है। इसके रचनाकार महर्षि के घोरविरोधी पं. श्रद्धाराम फिलौरी हैं, किन्तु आर्य समाज की पुस्तकों में भी यह विद्यमान है। क्या भजन के रूप में इसे आर्य परिवारों में भी बोला जा सकता है? कृपया, समाधान करें।

– विश्वेन्द्रार्य, आगरा

समाधान - **(क)** महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन काल में वेद की मान्यता के प्रचार को सर्वोपरि रखा। जो भी महर्षि को वेद विरुद्ध दिखता था, उसका प्रतिकार अवश्य करते थे। कभी महर्षि ने अपने जीवन में वेद विरुद्ध मत के साथ समझौता नहीं किया। जब कभी उनको लगता कि कुछ उनसे गलत हुआ है तो तत्काल अपनी गलती स्वीकार कर तथा उसे छोड़कर आगे बढ़ जाते थे।

जिस समय जयपुर में महर्षि पधारे तो उस समय वैष्णवों का मत अधिक प्रचलित था, उस मत को दबाने के लिए महर्षि दयानन्द ने शैव मत का प्रचार किया और इतना प्रचार किया कि वहाँ के मनुष्यों के गले में रुद्राक्ष तो आये ही आये, ऊँट-घोड़े-हाथी तक को भी रुद्राक्ष पहनाए जाने लगे थे। कालान्तर में महर्षि से किसी ने इस विषय में पूछा तो ऋषिवर ने बड़ी विनम्रता से कहा कि वह हमारी भूल थी, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था। महर्षि दयानन्द तो इस समाज की भूलों को दूर करने में लगे रहे और हम हैं कि इस महर्षि के भूल रहित आर्य समाज में भूल डालते जा रहे हैं। आर्य समाज के वे तथा कथित उदारवादी सिद्धान्तों से समझौता करने में आगे बढ़-चढ़ कर भाग लेते दिखाई देते हैं। यज्ञ में गणेश पूजा हो रही है कोई बात नहीं, होने देते हैं। किसी की श्रद्धा है तो हम क्यों किसी की श्रद्धा को ठेस पहुँचावे? ये सोच उदारवादियों की है और तिलक लगाना, हाथ पर धागा बाँधना, यज्ञ के बाद प्रसाद के बहाने धन हरण करना आदि। इनके साथ पूर्णाहुति से पहले इस मन्त्र का पाठ किया जाता है-

पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

इसका भाव तो बहुत अच्छा है कि- वह भी पूर्ण है, यह भी पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण निकलता है। पूर्ण में से सम्पूर्ण निकाल लें तब भी पूरा रहे, पूरे में पूरा जोड़ दें तब भी पूरा रहे। यह विलक्षण बात परमेश्वर को पूर्ण दिखाने के लिए कहीं गई है, किन्तु यज्ञ की पूर्ण आहुति के समय इसको बोलना, पुरोहितों की स्वच्छन्दता है। वहाँ तो महर्षि दयानन्द ने "सर्वं वै पूर्णं स्वाहा" इस वाक्य से तीन बार पूर्ण आहुति का विधान किया है।

इसी प्रकार पूर्णाहुति के बाद बचे हुए घी को शतधार रूप बनाकर डालने के लिए भी मन्त्र खोज लिया है-

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

– य. १.३

इस मन्त्र में "शतधारम्" और "सहस्रधारम्" शब्दों को देखकर यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ कुण्ड के ऊपर छेदों वाली छलनी बाँध देते हैं और उसमें घी डालकर शत सहस्र धार बनाते हैं, जो कि इस प्रकार का विधान यज्ञ कर्म में कर्मकाण्ड से जुड़ें ग्रन्थों में नहीं लिखा हुआ है। यहाँ इस मन्त्र में आये 'शतधारम्' और 'सहस्रधारम्' का अर्थ धारा न होकर दूसरा ही है। इन दोनों का महर्षि दयानन्द अर्थ करते हैं- (धारम्) असंख्यात संसार का धारण करने वाला (परमेश्वर)। (सहस्रधारम्) अनेक प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करने वाला (ईश्वर)। इन दोनों शब्दों का अर्थ महर्षि ने इस ब्रह्माण्ड व समस्त चराचर जगत् को धारण करने वाला परमात्मा किया है और ये यज्ञ में घी की धारा लगाने वाले सौ धारा, हजार धारा को लेकर करते हैं जो कि उचित नहीं है।

उपरोक्त यज्ञ में महर्षि की बात को छोड़ स्वेच्छा से किये कर्मों के साथ यह 'आरती' भी ऐसा ही कर्म है। इस

'आरती' गाने का निषेध हम इसलिए नहीं कर रहे कि यह 'आरती' महर्षि दयानन्द के विरोधी श्रद्धाराम फिलौरी ने लिखी है, निषेध तो इसलिए कर रहे हैं कि इसमें अयुक्त बातें लिखी हुई हैं।

'जो ध्यावे फल पावे'- इस वाक्य को यदि वैदिक दृष्टि से देखेंगे तो युक्त नहीं हो पायेगा, क्योंकि वैदिक सिद्धान्त में ध्यान मात्र से फल नहीं मिलता, फल के लिए पुरुषार्थ (कर्म) करना पड़ता है। हाँ, यदि ध्यान सत्य परमेश्वर का विधिवत् किया गया है तो मन के शान्ति रूपी फल अवश्य मिलेगा, किन्तु यहाँ तो मूर्ति के सामने आरती गाई जा रही है, उसका फल क्या होगा, आप स्वयं निर्णय करें। आरती में आता है- ''मैं मूरख खल कामी।'' अब इस वाक्य को बोलने वाले क्या सब कोई मूर्ख, खल और कामी हैं? यहाँ तो इसको बड़े-बड़े सन्त गाते हैं। या तो संत इस बात पर ध्यान नहीं देते अथवा अपने को खल, कामी मानते होंगे। और भी ''ठाकुर तुम मेरे'' में ठाकुर शब्द विष्णु के लिए प्रयोग में आता है, इसका एक अर्थ प्रतिमा भी है। विष्णु जो पौराणिक परम्परा में ब्रह्मा, विष्णु, महेश में से एक हैं। अब यदि ऐसा है तो यज्ञ के बाद वैदिक मान्यता वाले को यह आरती नहीं गानी चाहिए।

यज्ञ के बाद संस्कारों में महर्षि दयानन्द ने वामदेव गान करने को कहा है। यदि हम ऐसा करते हैं तो अति उत्तम है और यदि नहीं कर पा रहे तो उसके स्थान पर वैदिक सिद्धान्त युक्त यज्ञ प्रार्थना आदि भजन गा लेते हैं तो भी ठीक ही है। 'यज्ञ प्रार्थना' जैसे उत्तम गीत को छोड़ या उसके साथ-साथ यह अवैदिक आरती गाना युक्त नहीं है, इसलिए आर्य लोग इसको यज्ञ के बाद न अपनावें और न ही अपनी दैनिक नित्य कर्म आदि पुस्तकों में छापें।

पं. श्रद्धाराम फिलौरी जो कि इस आरती के लेखक हैं, के विषय में आर्य जगत् के इतिहास के मर्मज्ञ प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने 'इतिहास की साक्षी' पुस्तक में विस्तार से बताया है। इनके पत्रों को भी उस पुस्तक में दिया हुआ है, जिससे कि पाठकों को इनकी स्वाभाविक मनोवृत्ति का पता लगे।

वेद उपनिषदों के विषय में इनकी क्या मान्यता रही है, उसे हम यहाँ लिखते हैं- ''संवत् १९३२ में मुझे चारों वेदों को पढ़ने और विचारने का संयोग मिला तो यह बात निश्चित हुई कि ऋग्वेदादि चारों वेद भी यथार्थ सत्य विद्या का उपदेश नहीं करते, किन्तु अपरा विद्या को ही लोगों के मन में भरते हैं। हाँ, वेद के उपनिषद् भाग में कुछ-कुछ सत्यविद्या अर्थात् पराविद्या अवश्य चमकती है, परन्तु ऐसी नहीं कि जिसको सब स्पष्ट समझ लेवें। चारों वेद और उपनिषद् का लिखने वाला सत्यविद्या को जानता तो अवश्य था, परन्तु उसने सत्य विद्या को वेद में न लिखना व छिपा के लिखना इस हेतु से योग्य समझा दिखाई देता है कि उस समय के लोगों के लिए वही उपदेश लिखना श्रेष्ठ था।'' (पुस्तक 'इतिहास की साक्षी' से उद्धृत)। इसमें स्पष्ट रूप से फिलौरी जी का वेद के प्रति मन्तव्य आ गया। उनकी मान्यता रही कि वेद सत्य उपदेश नहीं करता। जिसका वेद पर विश्वास नहीं, उसका ईश्वर पर कैसे हो सकता है और वह सिद्धान्त को कैसे ठीक-ठीक प्रतिपादित कर सकता है, जैसा कि उनकी आरती से ज्ञात हो रहा है। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर।

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

डॉ० धर्मवीर आचार्य का योगशास्त्रीय परम्परा के संवर्द्धन में योगदान

-राजवीर सिंह

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, वैदिक विद्वान्, गम्भीर अनुसन्धाता, ओजस्वी वक्ता, उपदेशक, लेखक, बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा (अजमेर) के यशस्वी प्रधान तथा मन्त्री पदों के निर्वहन कर्त्ता पं० धर्मवीर का जन्म महाराष्ट्र प्रदेश के उद्‌गीर क्षेत्र में आर्य परिवार से सम्बद्ध पिता श्री भीमसेन आर्य और माता श्रीमती 'श्री' के गृह में दिनाङ्क २० अगस्त १९४६ ईसवी को हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा अपने जन्म क्षेत्र में प्राप्त की। तत्पश्चात् आर्यसमाज के तपोनिष्ठ एवं कर्मठ संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती (पूर्वनाम आचार्य भगवान देव) के श्रीचरणों में अध्ययनार्थ गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर में ईसवी सन् १९५६ में प्रविष्ट हुए। **आप एक मेधावी कुशाग्र बुद्धि छात्र होने के कारण अध्ययन में अग्रणी रहे। आपने गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल काँगड़ी (हरिद्वार) आदि से आचार्य, एम.ए. तथा आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की। आपने पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ से 'ऋषि दयानन्द के जीवनपरक महाकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन'** विषय पर शोध करते हुए पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपने ईसवी सन् १९७४ में दयानन्द कॉलेज अजमेर के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक और अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। आप प्रभावशाली वक्ता, प्रचारक, चिन्तक, दार्शनिक तथा तार्किक हैं। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती ज्योत्स्ना आर्या तथा आपकी पुत्रियाँ आपके सामाजिक कार्यों में पूर्णरूप से सहयोगी हैं और आपका पूरा परिवार पारस्परिक व्यवहार में संस्कृत भाषा का प्रयोग करता है।

आपने वैदिक धर्म, अध्यात्म आदि के प्रचारार्थ भारत वर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में यात्रा की है और विदेशों में हॉलैण्ड, सिंगापुर, नेपाल आदि स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार किया है। प्रचार के साथ-साथ आप जिज्ञासु छात्रों को वैदिक साहित्य का अध्यापन भी पूरी निष्ठा से कराते रहते हैं। आप महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा से ईसवी सन् १९८४ में जुड़े और प्रधान तथा मन्त्री आदि पदों का निर्वहन करके सभा के उद्देश्यों तथा कार्यों को आपने एक सच्चे ऋषिभक्त के रूप में पूरा किया है। आपने परोपकारिणी सभा के अधीन अनेक प्रकल्प और योजनाएँ संचालित की हैं, जिनमें गुरुकुल स्थापना, साधना आश्रम की स्थापना, गोशाला की स्थापना आदि प्रमुख हैं।

आपने लेखन के माध्यम से महनीय कार्य किया है। आप परोपकारिणी सभा के मुखपत्र **'परोपकारी'** पाक्षिक के अनेक वर्षों से अवैतनिक सम्पादक हैं। परोपकारी पत्रिका आर्यसमाज की विशिष्ट एवं मानक पत्रिका है। इसके गम्भीर तथा समसामयिक सम्पादकीय आपकी अद्‌भुत प्रतिभा के प्रमाण हैं। आपकी लेखनी से समाज को ऊर्जा मिलती है।

आपके सम्पादकत्व में परोपकारी में **'योगविद्या विषयक'** अनेक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आपने **'सत्यार्थप्रकाश क्या है'** नामक पुस्तक के साथ-साथ **अन्य लेखन भी किया है। आपके मार्गदर्शन में ऋषि उद्यान में साधना आश्रम का संचालन हो रहा है, जिसमें साधकगण साधनारत हैं। वर्ष में कई बार यहाँ योग शिविरों** का आयोजन होता है, जिनमें आर्यसमाज के उच्चकोटि के योगविशेषज्ञ/योगगुरु/योगप्रशिक्षक जिज्ञासु साधकों को योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण देते हैं और आप स्वयं भी योगविषय पर व्याख्यान देने के साथ-साथ **'योगदर्शन'** का अध्यापन करते हैं। आपकी प्रेरणा से आर्ययुवकों तथा युवतियों ने योगसाधना के मार्ग का अनुकरण किया है।

आप द्वारा वैदिक तथा दार्शनिक विषयों पर दूरदर्शन पर भी व्याख्यान प्रस्तुत किये जाते हैं, जिनमें योग अध्यात्म भी एक अंग है। आपके व्यक्तिगत जीवन में योगाभ्यास के रूप में आसन, प्राणायाम और ध्यान अनिवार्य रूप से समाहित है। आपने विद्यार्थी काल में स्वामी ओमानन्द सरस्वती से प्राणायाम आदि का ज्ञान प्राप्त किया था। यहाँ ध्यातव्य है कि स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के महान् योगी स्वामी आत्मानन्द सरस्वती (पं० मुक्तिराम उपाध्याय) से योग साधना का ज्ञान प्राप्त किया था और योगदर्शन के प्रकाण्ड शास्त्रीय विद्वान् तथा साधक स्वामी आर्यमुनि से योगदर्शन का विशेष अध्ययन किया है। डॉ० धर्मवीर आचार्य को ऐसे महान् योगसाधक (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) से प्राणायाम आदि का विशेष ज्ञान मिला है।

डॉ० धर्मवीर जी को अपने जीवन में अनेक योगसाधकों का सानिध्य मिला, जिनमें स्वामी सत्यपति

परिव्राजक (रोजड़), स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (हरिद्वार), स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, स्वामी ब्रह्ममुनि आदि प्रमुख हैं। इनके साथ ही आपको पौराणिक संन्यासी महात्मा आनन्द चैतन्य (बिजनौर) की योगसाधना को भी निकट से देखने व जानने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ है।

डॉ० धर्मवीर ने परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रन्थों का सम्पादन, निरीक्षण और प्रबन्धन किया, अतः इस प्रक्रिया में जितना भी योगविषयक साहित्य प्रकाशित हुआ है, उसमें आपका अनुभवी योगदान रहा है। इसके साथ ही स्वामी दयानन्द का समस्त साहित्य परोपकारिणी सभा के द्वारा प्रकाशित हुआ है। उसमें आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा अपने ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर योगविषयक बिन्दुओं की व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जिसे आपको अनेक बार पढ़ने और सम्पादित करने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त ऋषिमेले के अवसर पर अजमेर में आयोजित वेदगोष्ठियों में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोधनिबन्धों को आपके सम्पादकत्व में पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया गया है।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध योगसाधक तथा लेखक स्वामी विश्वङ्ग द्वारा लिखित योगविषयक पुस्तकों में प्रकाशकीय का लेखन आप द्वारा किया गया है, जिनका प्रकाशन वैदिक पुस्तकालय दयानन्द आश्रम केसरगंज अजमेर द्वारा हुआ है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर प्रमाणित है कि डॉ० धर्मवीर आचार्य व्यक्तिगत जीवन में तथा लेखन और प्रचार के माध्यम से योगविद्या के विस्तार में संलग्न हैं और आप द्वारा सम्पादित परोपकारी पत्रिका तथा आपके नेतृत्व में संचालित दयानन्द साधक आश्रम और परोपकारी प्रकाशन विभाग आदि भी योगशास्त्रीय परम्परा के संवर्द्धन में विशेषरूप से सक्रिय हैं।

- शोधछात्र, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग,
म.द.वि.वि. रोहतक, हरियाणा

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३१

समजैषमिमाहं सपत्नीरभि भूवरी -ऋक्. १०/१५९/६

घर को सफलतापूर्वक चलाने के लिये मनुष्य में आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। आत्मविश्वास योग्यता और सामर्थ्य से उत्पन्न होता है। आचार्य चाणक्य कहते हैं- मनुष्य को अपने अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिये ज्ञानवान बनना चाहिए। ज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, परन्तु ज्ञान का प्रारम्भिक भाग सब प्राप्त कर सकते हैं और वह सबके लिये उपयोगी है। सामान्य ज्ञान को चार भागों में शास्त्रकारों ने विभक्त किया, जिसे आन्विक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति कहा गया है। ये चारों विशेषज्ञता के कारण चार वर्णों की योग्यता का आधार बनती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कम या अधिक रूप में इनकी आवश्यकता होती ही है।

ये योग्यताएँ सबके लिये क्यों और कैसे आवश्यक होती हैं, इसको समझने के लिये शास्त्र के वचनों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। छोटी-से-छोटी इकाई में जो गुण होते हैं, बड़ी-से-बड़ी इकाई में भी वे ही गुण होते हैं, अन्तर उनकी मात्रा का होता है। सभी गुण सभी में होने पर उनकी मात्रा की भिन्नता से व्यक्ति के व्यक्तित्व का भेद होता है। एक व्यक्ति का बुद्धि पक्ष ब्राह्मण कहलाता है, सामर्थ्य पक्ष को क्षत्रिय कहते हैं, साधनों के संग्रह एवं वितरण पक्ष को, उपयोग को वैश्य नाम दिया गया है। वहीं इन सबको करने के लिये सहज प्राप्त सामर्थ्य को शूद्र कहा गया है। इनमें कोई भी अनावश्यक नहीं है, परन्तु उपार्जन की क्षमता के कारण इनके क्रम में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्रत्व की कल्पना की गई है। प्रत्येक व्यक्ति चारों सामर्थ्य से युक्त होने पर ही पूर्णता को प्राप्त होता है। इनमें से कोई भी सामर्थ्य कम होने पर व्यक्ति अपूर्ण और असमर्थ हो जाता है।

इसी आधार पर मनुष्य शरीर को चार भागों में बाँटकर सिर को ब्राह्मण, भुजाओं को क्षत्रिय, मध्य भाग को वैश्य तथा पैरों को शूद्र कहा गया है। शरीर की इकाई के चार भाग किये गये हैं, उसी प्रकार समाज के चार भागों को मिलाकर एक शरीर बनता है। व्यक्ति, समाज एवं देश सभी एक व्यक्ति हैं और सभी के चार भाग हैं। इन्हीं को आन्विक्षिकी, त्रयी, वार्ता एवं दण्डनीति से सीखा जाता है। त्रयी से ज्ञानवान धर्माधर्म को जानता है, उसे ब्राह्मण कहा गया। दण्डनीति से न्याय-अन्याय को देखा जाता है, उसे क्षत्रिय कहते हैं। जहाँ हानि-लाभ को समझा जाता है, उसे वार्ता कहा गया है। इन तीनों का सामञ्जस्य आन्विक्षिकी के द्वारा आता है।

आन्विक्षिकी क्या है? इसके लिये कहा गया है- **सांख्यं योगो लोकायतनं चेत्यान्विक्षिकी**- सांख्य योग लोकायतन को समझना तीनों के लिये आवश्यक है। इस

ज्ञान से ही व्यक्ति के अन्दर कार्य करने का सामर्थ्य उत्पन्न होता है। जब विषम परिस्थिति और समस्या सामने आती है, तो मनुष्य निर्णय करने में असमर्थ होता है। मनुष्य स्वस्थ सहज होने पर ही ठीक निर्णय लेने में समर्थ होता है। जो मनुष्य धार्मिक होता है, आस्तिक होता है, वह समस्या के आने पर विचलित नहीं होता। विवेक करके निर्णय करना उसके लिये कठिन नहीं होता। मनुष्य केवल दु:ख में ही विचलित होता हो, ऐसी बात नहीं। वह अधिक प्रसन्नता, प्राप्ति एवं उत्साह की दशा में उचित समय पर निर्णय नहीं ले पाता और भूल कर बैठता है। जो घोषणा मन्त्र में एक गृहिणी कर रही है, उसके पीछे उसकी योग्यता ही कारण है। निर्णय करने की योग्यता में जो बाधा आ सकती है, उनको जान कर दूर करने का सामर्थ्य नेता में होना चाहिए। गृहिणी घर की नेतृ है, उसने सभी शत्रुओं को जीत लिया है। यहाँ शत्रु मनुष्य या व्यक्ति हो, यह अनिवार्य नहीं। कार्य में आने वाली सारी बाधायें भी शत्रु ही हैं। किसी भी प्रकार की बाधा को समझ सकना और बिना विचलित हुए उसे दूर करने के उत्साह को इस मन्त्र में बताया गया है।

क्रमशः ....

पुस्तक - परिचय

पुस्तक का नाम- सत्यार्थ प्रकाश दर्शन
सम्पादक - प्रदीप कुमार शास्त्री
प्रकाशक- शताब्दी स्मृति ग्रन्थमाला प्रकाशन समिति आर्य समाज शहर, बड़ा बाजार, सोनीपत, हरियाणा
मूल्य - ६०=०० **पृष्ठ संख्या** - १९२

प्रस्तुत पुस्तक विक्रम सम्वत् २०२० के सत्यार्थ प्रकाश-विशेषांक से चयनित कुछ विशिष्ट लेखों पर आधारित है।

महर्षि ने आर्यावर्त्त वासियों के लिए एक अमूल्य भण्डार प्रदान किया है। संसार में पोंगा पंथियों का बोल बाला है। वे भोली-भाली जनता को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। वे स्वयं भी अथाह गर्त में गिर रहे हैं तथा जन मानस को ऊपरी प्रलोभन देकर अपना उल्लू सिद्ध करने के लिए आडम्बरों के जाल में ग्रसित कर रहे हैं। स्वामी जी ने सत्य को सर्वोपरि रखा और आज एवं पूर्व में अर्थात् महाभारत काल के बाद में आये परिवर्तन को वास्तविकता का पाठ पढ़ाया। आज अंधविश्वासों एवं ढोंगियों का जाल फैला हुआ है, इसीलिए वेद-वेदांग और शास्त्रों को पढ़ने एवं सत्य को अपनी बुद्धि की कसौटी पर खरा उतरने के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना-पढ़ाना अत्यन्त आवश्यक है।

स्वस्थ शरीर के लिए चरक संहिता के आधार पर उपचार किया जा सकता है, उसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से सही ज्ञानार्जन एवं जन कल्याण संभव है। सत्याचरण से मन की, तप से आत्मा की तथा ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश सार के पढ़ने से कायाकल्प होजाता है। इस पुस्तिका में १६ लेख हैं, जिनमें सत्यार्थ प्रकाश क्यों, गृहस्थाश्रम की सफलता के उपाय, सृष्टि उत्पत्ति क्यों और कैसे, क्या विदेश यात्रा पाप है? मूर्ति पूजा विवेचन आदि लेख प्रमुख हैं। पाठक सम्पूर्ण पुस्तक का स्वाध्याय करेंगे तो पूर्ण आत्मसन्तोष होगा और भावी पीढ़ी का भी कल्याण होगा।

ईश्वर का निज नाम ओ३म् है। ऋषि ने ईश्वर के एक सौ नाम गिनाएँ हैं। धर्म आचार प्रधान है। विदेश यात्रा पाप नहीं, इतिहास की शिक्षा, मांस भक्षण निषेध, भारतीयों की विशेषता, गौरक्षा, मण्डन-खण्डन क्यों- पर आदि विषयों सरल सटीक भाषा में सार तत्त्व के आधार पर सम्पूर्ण सामग्री है। पाठकों को जीवन में उतारकर अवश्य लाभ उठाना चाहिए। सभी के लिए अनुपम सामग्री है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १५ से २२ मई, २०१६ **आर्यवीर शिविर**, सम्पर्क- ०९४१४१६५९०

२. ३० मई से ५ जून, २०१६ **आर्य वीराङ्गना शिविर**, सम्पर्क- ०९४१४१६५९०

३. १२ से १९ जून, २०१६ - **योग-साधना शिविर**, सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

संस्था - समाचार

०१ से १५ मार्च २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। रविवार प्रातःकाल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। आर्यवीर-दल का प्रशिक्षण कार्यक्रम सुबह-शाम नियमित रूप से होता है, जिसमें जूडो-कराटे, लाठी चलाने का अभ्यास आदि कराया जाता है। इसमें नगर के युवा वर्ग और बालक भाग लेते हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल सरस्वती भवन प्रांगण में आसन-प्राणायाम आदि क्रियाएँ करायी जाती हैं।

प्रातःकालीन सत्संग में ऋग्वेद के दसवें मण्डल के १२१वें सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि इस सूक्त के दस में से नौ मन्त्रों का चौथा चरण 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' है। परमात्मा की सृष्टि निर्माण प्रक्रिया पूर्णतः वैज्ञानिक है। सृष्टि उत्पत्ति की व्याख्या नासदीय सूक्त, पुरुष सूक्त तथा संध्या के कुछ मन्त्रों में भी है। वह परमात्मा एक ही स्वामी है, जगत् को बनाने वाला है, चलाने वाला है। परमेश्वर ने ही इस जगत् के सब पदार्थों को उत्पन्न किया है। वह पदार्थों का निर्माण समग्रता से करता है। मनुष्य किसी वस्तु को थोड़ा-थोड़ा, अलग-अलग समय में बनाता है, किन्तु ईश्वर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सब कुछ एक साथ बनाता है। सब दृश्यमान पदार्थ परमात्मा के भीतर ही हैं, उससे बाहर कुछ भी नहीं है। मनुष्य पदार्थ से अलग रहकर वस्तु का निर्माण करता है, किन्तु इस संसार का निर्माण उस परमात्मा के गर्भ में अर्थात् अन्दर ही होता है, उसे बाहर से कुछ नहीं करना पड़ता। वह ऊर्जा और तेज से सम्पन्न है। जैसे माता के गर्भ में संतान का निर्माण होता है, ऐसे ही यह दृश्यमान जगत् परमात्मा के भीतर ही बनता है। किसी वस्तु के निर्माण में क्रिया, वचन, काल, लिंग आदि बाहर चलने वाली चीजें हैं, ये मनुष्यों के समझने के लिए हैं, ईश्वर के लिए इन सबका कोई अर्थ नहीं है। संसार में जो भी जड़-चेतन है, उन सबका वह स्वामी है। वह पृथ्वी, द्युलोक और अन्तरिक्ष का आधार है। यह संसार अपने केन्द्र से बाहर नहीं होता। परमात्मा की भव्यता, विशालता, शक्तिमत्ता अतुलनीय है, उसके लिए समर्पण करें। अपनी हवि से उसकी सेवा करें। सब कुछ उसी का बनाया हुआ है, इसलिए सभी पदार्थ से उसकी सेवा करके अति प्रेम से विशेष भक्ति करें। सेवा करने में प्रेम मुख्य आधार है। अज्ञान से मोह होता है और ज्ञान से कर्त्तव्यनिष्ठा तथा श्रद्धा होती है। परमेश्वर के विषय में जानकर उसकी भक्ति करना ठीक है। मन्त्र के तीन चरण में सृष्टि रचना का उल्लेख है, चौथे चरण में उपासना का वर्णन है। हम जिसकी उपासना कर रहे हैं, उसके बारे में वह जैसा है वैसा ही वर्णन करते हैं, वह हमें अच्छा लगता है, यही उपासना है। उपासना का प्रयोजन उनके श्रेष्ठ गुणों को जानकर ग्रहण करना है। गुणों का ज्ञान हुए बिना उपासना सम्भव नहीं है। परमेश्वर की निकटता से अपने स्वयं का भी बोध होता है। आत्मस्वरूप का परिचय मिलता है। ईश्वर की उपासना करने वाला शरीर और आत्मा से बलवान होता है और समाज का कल्याण करने में समर्थ होता है। ईश्वर की उपासना के बिना कोई ईमानदार, परिश्रमी और धार्मिक नहीं हो सकता। ईश्वर की उपासना से सभी प्रकार के भय नष्ट हो जाते हैं। ईश्वर हमेशा विजयी होता है, कभी पराजित नहीं होता ऐसा जानकर जो मनुष्य परमात्मा को अपना सखा बना लेता है, वह निर्भीक हो जाता है, क्योंकि वह सबसे अधिक बलवान का मित्र होता है, अर्थात् दुर्बल व्यक्ति भी तब निर्भय हो जाता है, जब ईश्वर के बल को जान लेता है। जो ईश्वर पर विश्वास करने वाले रोगी हैं, वे शीघ्र स्वस्थ हो जाते हैं। जो नास्तिक होते हैं, वे बीमार होने पर जल्दी स्वस्थ नहीं हो पाते और अल्पायु में ही मर जाते हैं।

प्रातःकालीन सत्संग में ऋग्वेद के चौथे मण्डल के प्रथम सूक्त के मंत्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित्**

जी ने बताया कि अनेक लोग हमारा पालन-पोषण करते हैं, जैसे बचपन में माता-पिता, विद्या प्राप्त करते समय गुरुजन, राज्य संचालन द्वारा राजा और राजकर्मचारी, आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराने वाले व्यापारी और उद्योगपति, गृहस्थ लोगों द्वारा आमन्त्रित परोपकारी, धार्मिक विद्वान् जो सत्य उपदेश से हमारा पालन करते हैं-ऐसे विद्वानों का सत्कार करने वाले मनुष्य भाग्यशाली होते हैं। विद्वानों के साथ सत्संग करने से बुद्धि, विद्या बढ़ती है। उससे घर, परिवार, समाज, संगठन, संस्था, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग आदि का संचालन करने में कुशलता प्राप्त होती है। वर्तमान और अगला जन्म सुधरता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी उपदेश मिलने से शारीरिक सुख बढ़ता है। आत्मा और ईश्वर सम्बन्धी उपदेश प्राप्त होने पर आध्यात्मिक विश्वास तथा आत्मबल बढ़ता है। बचपन या किशोरावस्था में ही श्रेष्ठ विद्वानों का उपदेश प्राप्त हो जाये तो मनुष्य का जीवन बहुत अच्छा हो जाता है। वर्ण और आश्रम व्यवस्था सम्बन्धी उपदेश से राष्ट्र में सुख, शांति और समृद्धि बढ़ती है। विद्वानों का अन्न, वस्त्र, धन आदि से सत्कार करने वाले को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। अन्य देखने वाले भी प्रेरित होकर वैसे ही सबके कल्याण करने वाले विद्वान् बनने की कामना करते हैं। वेद, उपवेद, अंग, उपांग, शिल्प विद्या अर्थात् विभिन्न प्रकार के यन्त्र, कला-कौशल जानने और कृपापूर्वक उत्तम प्रकार से शिक्षित करने वाले अपने-अपने विषय के विद्वानों का सबको सत्कार करना चाहिये। समाज के अन्य शुभचिन्तक, मार्गदर्शक विद्वानों का भी सत्कार करना चाहिये। विद्वानों का ज्ञान विचारपूर्वक, भ्रमरहित एवं स्थिर होना चाहिये, जिससे उन विद्वानों के सुदृढ़ ज्ञान से संसार के अधिक से अधिक मनुष्यों को लाभ हो।

शुक्रवार ०४ मार्च फाल्गुन कृष्ण पक्ष की दशमी को **महर्षि दयानन्द जयन्ती** एवं सोमवार ०७ मार्च को **महर्षि दयानन्द बोधदिवस** हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर **डॉ. धर्मवीर जी** ने बताया कि जैसे वायु सब प्राणियों के लिये है, वैसे ही वेदविद्या भी सब मनुष्यों के लिये है। महर्षि दयानन्द जी का सबसे बड़ा उपकार यह है कि उन्होंने हमें वेद के द्वारा ठीक से सोचना और यज्ञ के द्वारा ठीक से कर्म करना सिखाया। स्वामी दयानन्द जी कहते थे कि स्वयं वेद पढ़ो, अपने परिवार को पढ़ाओ और अपने कर्मचारियों, मजदूरों, सेवकों को भी पढ़ाओ। समाज के प्रत्येक वर्ग को वेद अर्थात् सत्य विद्या पढ़ना, पढ़ाना चाहिये। जो व्यक्ति दूसरों को वेद पढ़ने से रोकता है, वह प्रत्यक्ष में दूसरों की और परोक्ष में स्वयं की हानि करता है। ठीक सोचने और ठीक काम करने का अधिकार सबको है और यह वेद से ही संभव है। विद्या मनुष्य को स्वामी बनाती है, धन मनुष्य को स्वामी नहीं बनाता। जो धन के अनुसार चलता है, वह नौकर ही रहता है। जो धन को अपने विवेक से चलाता है, वह धन का स्वामी होता है। स्वामित्व की योग्यता ज्ञान-विज्ञान, विचार से होती है, इसलिये वेद पढ़े बिना, अर्थात् सत्य विद्या की प्राप्ति के बिना कोई भी व्यक्ति मालिक नहीं बन सकता है। वेद ज्ञान के बिना उपासना में भी उत्कर्ष नहीं होता है। वेद का जितना अधिक अध्ययन करेंगे, उतना ही अधिक सांसारिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है। पौराणिक ब्राह्मणों ने क्षत्रिय, वैश्य और सेवक वर्ग को वेद तथा यज्ञ से दूर रखा। स्वामी दयानन्द जी ने समाज के अत्यन्त निचले व्यक्ति को भी वेद से जोड़ा। वेद का अर्थ गलत करने के कारण इस देश को सैकड़ों वर्षों की गुलामी सहनी पड़ी। वेद के विषय में धूर्तता और मूर्खता को स्वामी जी ने दूर किया।

प्रातःकालीन प्रवचन में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी और महान् दयालु थे। उन्होंने अपने विरोधियों का भी कभी अहित नहीं किया। महापुरुषों के लक्षण बाल्यकाल में ही दिखने लगते हैं। स्वामी जी बचपन से ही तार्किक थे। वे धन और सांसारिक कामनाओं से पूर्ण अनासक्त थे। उनको पूर्व जन्म से वैराग्य प्राप्त था। शिवरात्रि के दिन बाल्यावस्था में मूर्तिपूजा से विश्वास उठने पर उन्होंने सत्य शिव के खोज का संकल्प लिया तथा उस संकल्प को पूरा किया। गौतम बुद्ध और महर्षि दयानन्द जी, दोनों के सामने एक समान परिस्थिति आई कि वेदों में बलिप्रथा है। गौतम बुद्ध ने तो बलिप्रथा को देखकर वेद से ही दूरी बना ली, किन्तु ऋषि दयानन्द जी ने वेद के यथार्थ स्वरूप को जानने का निश्चय कर व्याकरण, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति, गृह्यसूत्र, ब्राह्मण ग्रंथों और चारों वेद आदि शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। स्वामी जी पूर्ण आस्तिक थे, उन्हें कभी ईश्वर के विषय में आशंका नहीं हुई। वे निर्भीक तथा राग-द्वेष से रहित थे, इसलिये समाज और राष्ट्र के लिये बहुत कार्य कर गये। वे प्रत्युत्पन्नमति विद्वान् थे, उनका अपना कोई निज मत न था, वे वेदों का ही प्रचार करते थे। वे वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रबल समर्थक थे। स्वामी जी का मानना था

कि कोई मनुष्य क्षण भर भी ज्ञान, कर्म और उपासना से रहित नहीं हो सकता। महापुरुष इन तीनों में सामंजस्य बना लेते हैं, साधारण मनुष्य नहीं बना पाता। महर्षि दयानन्द जी के इस जन्म दिवस और बोध दिवस से प्रेरणा लेकर हमें भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ना चाहिये।

सायंकाल भी ऋषि महिमा पर व्याख्यान व गीत हुए। **ब्र. देवेन्द्र जी** ने महर्षि महिमा का गीत सुनाया-'सूरज बन दूर किया जिसने पापों का घोर अँधेरा, वो देव दयानन्द मेरा......'। **ब्र. शिवनाथ जी** ने अपने वक्तव्य में कहा कि महर्षि दयानन्द जी के जीवन से हमें अनेक प्रेरणाएँ मिलती हैं, उनमें से एक है तप करना। वे आजीवन तपस्वी रहे, इसलिये राग-द्वेष और अविद्या से सदा दूर रहकर उन्होंने संसार के कल्याण का महान् कार्य किया। हमें भी सभी प्रकार के दोषों से दूर रहते हुए तपस्या करना चाहिये, तभी हमारा जीवन, समाज और राष्ट्र के लिय उपयोगी होगा। **बहन सीमा जी** ने स्वामी जी के जीवन और कार्यों को कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया। **माता कंचन जी** ने स्वामी जी के जीवन की घटनाओं को एक गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया-'ऋषि के कदम थे बिन डगमगाये, दशा देश की देख के आँसू बहाये....'। **माता ज्योत्स्ना जी** ने ऋषि की प्रशंसा में यह गीत सुनाया-'तारीफ करूँ क्या उसकी, जिसने हमें जगाया।........'**श्री गहलोत जी, श्री रमेश मुनि जी** एवं **ऊषा माता जी** ने ऋषि भक्ति के गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का सञ्चालन कर रहे **ब्र. रविशङ्कर जी** ने कहा कि आज आत्मनिरीक्षण करना चाहिये कि हमारा आचरण कैसा है-पशुओं, मनुष्यों अथवा दोनों जैसा?

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में 'उपदेश मंजरी' पर चर्चा करते हुए **आचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने पूना में प्रवचन देते समय मानसिक, वाचिक और शारीरिक अधर्म को दूर करने के लिए भी उपदेश किया था। बुरा चिन्तन करना, मन में द्वेष करना, ईर्ष्या करना, मिथ्या निश्चय करना आदि मानसिक पाप हैं। वे वाणी को व्यवहार का सबसे मुख्य साधन मानते थे। उनके अनुसार वाणी का सदुपयोग धर्म और दुरुपयोग अधर्म है। धर्म केवल पूजा-पाठ, संध्योपासना ही नहीं है। व्यवहार में सत्य और मधुर बोलना धर्म अर्थात् सुख का कारण है। कठोर बोलना, झूठ बोलना, चुगली करना, व्यर्थ बातें करना, जान-बूझकर बात को उड़ाना आदि अपने और पराये दुःखों का कारण हैं। इसी प्रकार चोरी, हिंसा आदि क्रूर कर्म, व्यभिचार अर्थात् परस्त्रीगमन शारीरिक अधर्म हैं, क्योंकि इन सब कुकर्मों से धन और यश का नाश होता है। समाज में अपमान, राज्य शासन की ओर से दण्ड और शारीरिक रोग आदि से व्यभिचार करने वाले को अत्यन्त दुःख होता है। दुष्कर्म बढ़ने से सामाजिक मर्यादा का नाश होकर अव्यवस्था बढ़ती है।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन में गुरुकुल के **ब्र. गणपति जी** ने कहा कि ईश्वर प्रदत्त इस मनुष्य जीवन को धर्म के बिना सफल नहीं बनाया जा सकता। विद्या और धन आदि पदार्थ, धर्म के बिना लाभदायक नहीं है। सांसारिक साधनों से आत्मिक उन्नति पूर्ण रूप से सम्भव नहीं है। धर्म ही एक ऐसा पदार्थ है जो हमारे अगले जन्म में भी काम आता है। धर्म के अभाव में हमारे देश में आज हिंसा, अराजकता, तोड़फोड़ का वातावरण बना हुआ है। धर्म करने में प्रथम कष्ट होता है, किन्तु बाद में सुख होता है। धार्मिक मनुष्य जिस कार्य को प्रारम्भ करते हैं, उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ते। मनु जी महाराज के बताये धर्म के दस लक्षण से उसके स्वरूप को सरलता से समझा जा सकता है। हम सबको धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए प्रयास करना चाहिये। **ब्र. शक्तिनन्दन जी** ने कहा कि वैदिक शिक्षा के अनुसार हमें समाज और राष्ट्र की रक्षा के लिए ब्रह्मशक्ति के साथ ही क्षात्रशक्ति भी प्राप्त करना चाहिये। महाभारत के समय ब्राह्मणों के आलस्य, प्रमाद के कारण क्षत्रिय आपस में लड़ते रहे। हमारे देश में कई बार विदेशी आक्रमण हुआ और उस समय के तथाकथित ब्राह्मण मूर्तियों के भरोसे रहे, न तो स्वयं युद्ध किया और न ही योद्धाओं को लड़ने दिया। राजाओं की आपसी फूट, आलस्य, प्रमाद, इन्द्रियसुखभोग के कारण यह देश हजारों वर्षों तक पराधीन रहा। स्वामी दयानन्द जी ने देश की मूल समस्या अज्ञानता को समझा और वेद का प्रचार करने के साथ ही इस देश की क्षात्रशक्ति को जगाने का कार्य किया, धर्मान्तरण को रोका। जब क्षात्रशक्ति के साथ ब्रह्मशक्ति भी होती है, तभी राष्ट्र सुरक्षित रहता है। वीर योद्धा शिवाजी महाराज को समर्थ गुरु रामदास का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आज देश में देशद्रोही सिर उठा रहे हैं, उसके लिए हमें क्षत्रियों को संगठित करना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा में वेद पठन-पाठन के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा देकर क्षत्रिय योद्धाओं को भी तैयार करना होगा। आने वाला समय बहुत गम्भीर है। शस्त्र द्वारा रक्षित प्रदेश में ही शास्त्र चर्चा हो सकती है, अन्यथा शास्त्र ज्ञान धरे रह जायेंगे। हमें

युद्ध के लिए सदा तैयार रहना चाहिये। जिस राज्य में लाल आँखों तथा काले शरीर वाला दण्ड विचरता है, वहाँ प्रजा मोह को प्राप्त नहीं होती। **ब्र. रविशंकर जी** ने कहा कि ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मंत्रों में परमेश्वर को जड़-चेतन जगत् का स्वामी स्वीकार किया है, किन्तु हम देखते हैं कि मनुष्य पशु, पक्षी, नदी, पर्वत, फल, फूल आदि सामान क्रय कर स्वामी बन जाता है, तो ऐसे में परमेश्वर के स्वामित्व को कैसे समझा जाए? वैदिक दृष्टि में इन वस्तुओं का क्रय-विक्रय तो मनुष्य कर सकता है, लेकिन इन वस्तुओं को उत्पन्न नहीं कर सकता और जिन वस्तुओं को वह उत्पन्न करता भी है, उनको भी परमेश्वर के उत्पन्न करने के बाद ही कर पाता है। वस्तुओं का अच्छा उपयोग करने के लिए प्रयोक्ता को निर्माता के नियमानुसार ही चलना होता है, इसी में उसका हित होता है, इसलिए सब पदार्थों का कारण परमेश्वर को जान, उसके स्वामित्व को हृदय में बैठा करके उसके नियमों का पालन करने का प्रयास करना चाहिये।

*** डॉ. धर्मवीर जी का वेद प्रचार कार्यक्रमः-** अमेरिका प्रचार यात्रा।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः- सम्पन्न कार्यक्रमः-(क) २४-२५ फरवरी** - आर्यसमाज कोटपुतली, जयपुर के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(ख) २८ फरवरी - आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत में सरपंचों को उपदेश।

आगामी कार्यक्रमः- (क) ०१ मार्च श्री रामकुमार जी के पौत्र का नामकरण संस्कार, कोटपुतली, जयपुर।

(ख) ४-६ मार्चः- नगर आर्यसमाज, लखनऊ के वार्षिकोत्सव में प्रवचन।

(ग) ७-८ मार्चः- गाँव कानोदा, बहादुरगढ़, हरियाणा में सवा मन घी से यज्ञ।

(घ) ९-१० मार्चः- श्री मनोज जी, दादरी, हरियाणा के पुत्र का उपनयन संस्कार।

(ङ) १२-१३ मार्चः- गुरुकुल छपरा कुरुक्षेत्र के वार्षिकोत्सव में प्रवचन।

आगामी कार्यक्रमः- (क) २०मार्चः- गुरुकुल रेवली के कार्यक्रम में मुख्य वक्ता।

(ख) २१ मार्चः- श्री अजयपाल जी, बदरखा, बड़ौत के यहाँ सत्संग का कार्यक्रम।

(ग) २२-२४ मार्चः- आर्यसमाज मुजफ्फरनगर में उपदेश।

***आचार्य कर्मवीर जी का प्रचारः-सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) ५-६ मार्चः-**आर्यसमाज गाँव ठौंड-कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव। **(ख) ७-१३ मार्चः-** गुरुकुल छपरा, कुरुक्षेत्र में आर्यवीर दल का शिविर व वार्षिकोत्सव।

आगामी कार्यक्रमः- (क) १६-२० मार्चः- सहारनपुर में विकास आर्य जी के यहाँ यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा, वेदपाठी- श्री सोमेश जी।

(ख) २२ मार्चः- आर्यसमाज सहारनपुर में होलिका-उत्सव।

(ग) २८ मार्च से ०४ अप्रैलः- श्री विनोदार्य, नागल, सहारनपुर के यहाँ ऋग्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा-वेदपाठी के रूप में श्री लक्ष्यवीर जी।

आर्यजगत् के समाचार

१. गुजरात में कन्या गुरुकुल का शुभारम्भ- आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट, रोजड़, गुजरात द्वारा संचालित 'आर्यवन आर्ष कन्या गुरुकुल' का शुभारम्भ ८ अप्रैल, २०१६ से होने जा रहा है। कन्या गुरुकुल की प्रधानाचार्या आचार्या डॉ. शीतल के निर्देशन में चलने वाले इस गुरुकुल के उद्‌घाटन की पावन वेला में स्वामी सत्यपति जी, स्वामी विवेकानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी और आचार्या शीतल का गुरुवृन्द आर्ष शोध संस्थान से आचार्य आनन्दप्रकाश जी, आचार्या नीरजा जी तथा तथा ऋषि उद्यान, अजमेर से आचार्य सत्यजित् जी की ओजस्वी वाणी का उपस्थित जनसमूह को लाभ मिलेगा। गुजरात राज्य के बाल एवं महिला विकास मन्त्री श्रीमती वसुबहन त्रिवेदी एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल व कई गणमान्य महानुभाव इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ायेंगे। गुरुकुल में छात्राओं के लिये ट्रस्ट की ओर से भोजन-आवासादि की अपेक्षित सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है। गुरुकुल में कम्प्यूटर, दूरभाष, प्रोजेक्टर, इन्टरनेट युक्त कार्यालय, अध्ययन कक्ष, वैदिक साहित्य से सम्पन्न पुस्तकालय, रसोईघर, भोजनालयादि से युक्त है, व्यायामशाला, भ्रमणादि के लिए विशाल मैदान एवं यज्ञशाला है।

प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यता-१०वीं कक्षा उत्तीर्ण, पाठ्यक्रम पूर्णकालीन आवासीय अध्ययन, छात्रा की गुरुकुल

का पाठ्यक्रम पढ़ने में रुचि, स्वस्थ, संस्कृत व्याकरण तथा दर्शन में रुचि रखने वाली छात्राओं का प्रवेश कार्य अप्रैल २०१६ से आरम्भ हो जाएगा। **सम्पर्क सूत्र-** ०९५०२८६३४९० वेब साईट- ***aryavanarshakanyagurukul.org***

२. प्रवेश प्रारम्भ- गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखण्ड का नवीन शैक्षणिक सत्र नवीन प्रवेश हेतु दि. ०२, १६ एवं ३० अप्रैल २०१६ को प्रवेश परीक्षा के साथ प्रारम्भ हो रहा है। कक्षा प्रथम में प्रवेश के लिये छात्र की आयु ६ वर्ष होनी अनिवार्य है। आयु प्रमाण-पत्र अवश्य साथ लाये। छात्रों का प्रवेश केवल कक्षा १ से ९ तथा ११ में ही हो सकता है। प्रवेश हेतु गत उत्तीर्ण परीक्षा के अंक पत्र की मूल एवं छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आई.डी. की छायाप्रति, छात्र के १० नवीतम पासपोर्ट फोटो, ४ फोटो अभिभावक के अवश्य साथ लाये।**सम्पर्क सूत्र-०९४१२०२४१४९, ०९९२७०८४३७८**

३. प्रवेश प्रारम्भ- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. में संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र, कम्प्यूटर आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या, हवन एवं यौगिक क्रियायें करायी जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। नये सत्र के प्रवेश ०१ अप्रैल २०१६ से प्रारम्भ हो रहे हैं। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएँ उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यहाँ के स्नातक विभिन्न विभागों में कार्यरत हैं। **सम्पर्क सूत्र-** ०९४१२५९५५४२, ९४११४८१६२४

४. आवश्यकता- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. को दो रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क तथा संस्कृत संस्थान के मानदेय पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है। **सम्पर्क सूत्र-** ०९४१२५९५५४२, ९४११४८१६२४

५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- ओड़िशा की राजधानी में स्थित आर्यसमाज शहीदनगर भुवनेश्वर का ३९वाँ वार्षिक महोत्सव ६, ७, ८ फरवरी २०१६ को आर्यसमाज के प्रधान इं. प्रियव्रत दास की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। त्रिदिवसीय महोत्सव अवसर पर वैदिक बृहद्यज्ञ, विभिन्न प्रेरणाप्रद वेद प्रवचन एवं भजनोपदेश, ओड़िशा में आर्य समाजीय विचारधारा के प्रचार-प्रसार की योजना, पूर्व ओड़िशा में गुरुकुल की स्थापना के लिये विचार-विमर्श, ओड़िशा का प्रथम वैदिक आश्रम श्रीवत्स गोरक्षा आश्रम ननरडा की सुरक्षा एवं वहाँ के विविध प्रकल्पों की उन्नति के लिये विचार आदान-प्रदान आदि कार्यक्रमों के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तथा विद्वानों को सम्मानित किया गया।

वैवाहिक

६. वर चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- २५ वर्ष, कद- ५ फुट २ इंच, शिक्षा- बी.टेक, एम.बी.ए. इनफोर्मेशन सिस्टम, झाँसी, उ.प्र. युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित युवक चाहिए। **सम्पर्क-** ०९४५२९०६५६८ ई-मेल- jaswantthakur2401@gmail.com

चुनाव समाचार

७. आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर, जि. रेवाड़ी, हरि. के चुनाव में **प्रधान-** श्री मा. दयाराम आर्य, **मन्त्री-** श्री जयप्रकाश आर्य, **कोषाध्यक्ष-** श्री दलीपसिंह आर्य को चुना गया।

शोक समाचार

८. श्रीमान् केशवलाल जी पुत्र श्री लालदास जी, निवासी १९, चित्रगुप्त नगर, इमली का फाटक, जयपुर, राज. का ९८ वर्ष की आयु में २६ नवम्बर २०१५ को निधन हो गया। आप आजन्म आर्यसमाज से सक्रिय रूप से जुड़े रहे तथा सिरोही आर्यसमाज के प्रधान भी रहे। राजस्थान पुलिस की सेवा में रहते हुए उन्होंने विभाग की तथाकथित बुराइयों से अपने आपको दूर रखते हुए अपने परिवार एवं मित्रों को वैदिक संस्कार दिए। वे ऐसे ऋषि भक्त थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन एक श्रेष्ठ आर्य पुरुष के रूप में व्यतीत लिया। परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

निर्माणाधीन अतिथि शाला।

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : ३० मार्च, २०१६ ३९५९/५९

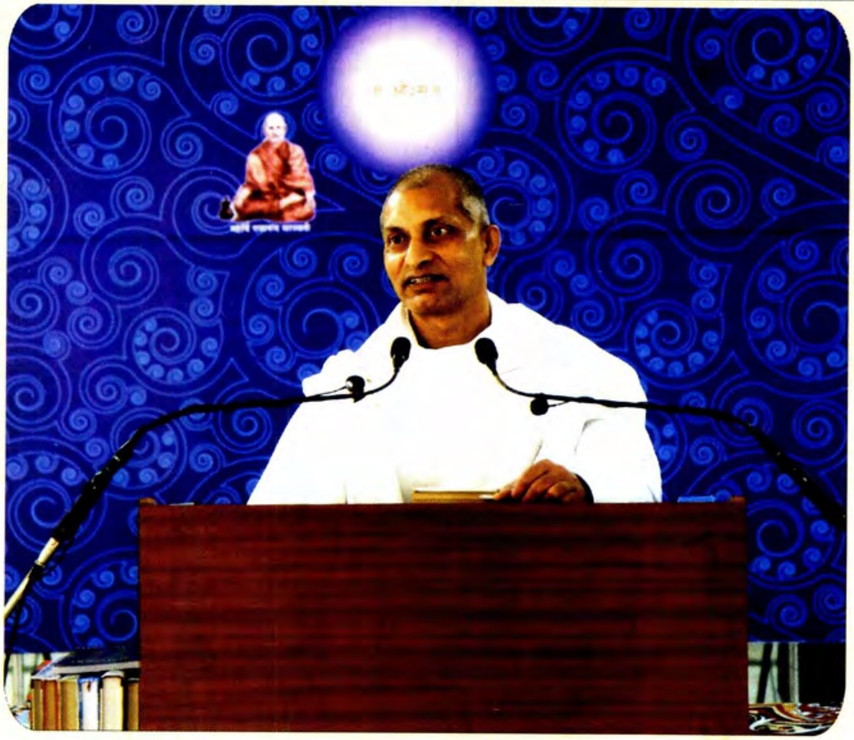

आचार्य श्री सत्यजित् जी आर्य मीमांसा और वेदान्त का अध्यापन कराते हुए।

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१